॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

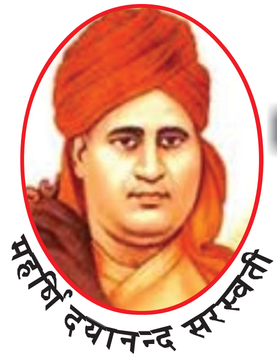

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

जुलाई, 2017 वर्ष 20, अंक 7
विक्रमी सम्वत् 2074
एक प्रति का मूल्य 10/-रुपये
दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110
दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756
वार्षिक शुल्क 100 रुपये
ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com
कुल पृष्ठ 20

प्राण-साधना

❒ आचार्य चैतन्यमुनि

प्राणाय नमो यस्य सर्वमिदं वशे। यो भूत: सर्वस्येश्वरो यस्मिन्त्सर्वं प्रतिष्ठितम्।। (अथर्ववेद 11.4.1) मन्त्र में प्राण की श्रेष्ठता के बारे में कहा गया है कि उस प्राण को सबका नमन है, जिसके बस में यह सब कुछ है। जो समस्त प्राणियों का ईश्वर है और जिसमें यह सब प्रतिष्ठित है। तैत्ति.उप. का ऋषि कहता है-**प्राणं देवा अनुप्राणन्ति मनुष्या: पशवश्च ये। प्राणो हि भूतानामायुस्तस्मात्सर्वायुषमुच्यते। सर्वमेव त आयुर्यन्ति ये प्राणं ब्रम्ह्मोपासते। प्राणो हि भूतानामायुस्तस्मात्सर्वायुषमुच्यते॥** (ब्र.3.1.2) अर्थात् जो देव, मनुष्य और पशु हैं वे प्राणों के आधार पर ही जीवन धारण करते हैं। प्राण ही प्राणियों की आयु है, अत: प्राण ही सम्पूर्ण आयु कहा गया है। जो प्राणरूपी ब्रम्ह की साधना करते हैं वे सम्पूर्ण आयु को प्राप्त होते हैं। प्राण ही प्राणियों की आयु है, अत: प्राण ही सम्पूर्ण आयु कहा गया है। प्राण की श्रेष्ठता दिखाने के लिए बृहदा.उप. में एक प्रसंग आया है कि जब देवों और असुरों का संघर्ष हुआ तो असुरों पर विजय प्राप्त करने के लिए देवों ने उद्गीथ की साधना की। उन्होंने पहले वाणी से फिर घ्राण, चक्षु, श्रोत्र तथा मन से साधना की मगर सभी जगह असुरों ने पाप से बीन्ध दिया। अन्तत: देवों ने प्राणों में उद्गीथ की साधना की तथा वहां असुर उन्हें पराभूत नहीं कर सके, बल्कि जब वे प्राण को पाप से बिन्धने के लिए गए तो स्वयं ही इस प्रकार से चूर-चूर हो गए जैसे किसी पत्थर से टकरा कर मिट्टी का ढेला चूर-चूर हो जाता है। इसी उपनिषद् में इन्द्रियों के विवाद के प्रसंग द्वारा प्राण की श्रेष्ठता दर्शाई गई है। प्रश्नोपनिषद् में रयि से प्राण को श्रेष्ठ तथा अमृतरूप बताया गया है।

प्राण की शक्ति बढ़ानें और उसे अनुशासित करने की विधि को प्राणायाम् कहते हैं। प्राणायाम ही प्राण-साधना का मूलाधार है। इस प्राणायाम द्वारा ही हम प्राणमय-कोष की सिद्धि करके साधना के पथ पर द्रुत गति से आगे बढ़ सकते हैं। महर्षि पतंजलि जी ने आसन के बाद प्राणायाम को स्थान दिया है। यह तकनीक भारतीय मनीषियों की एक विशेष देन है। प्राणायाम की सिद्धि के बाद व्यक्ति की इन्द्रियाँ स्वत: ही अन्तर्मुखी हो जाती हैं। यही नहीं इससे अपार शारीरिक शक्ति भी प्राप्त होती है। इससे शरीर में शुद्ध रक्त का संचरण होता है। प्राणायाम का अभ्यास न करने से हमारे फेफड़ों का बहुत सा हिस्सा रोगग्रस्त हो जाता है तथा इसके विपरीत प्राणायाम करने से फेफड़ों की सक्रियता बढ़ती है। प्राणायाम से व्यक्ति के भीतर शारीरिक, मानसिक और आत्मिक बल का तथा साहस, शक्ति और उत्साह का संचार होता है। उसके भीतर दु:खों को सहने की अपार शक्ति प्राप्त हो जाती है। इससे मानसिक सूक्ष्मता मिलती है तथा विद्यार्थी इसके अभ्यास से अपनी स्मरण शक्ति बढ़ा सकते है। इस सम्बन्ध में हर्षि दयानन्द जी कहते हैं-'ब्राम्हण अर्थात् ब्रम्हवित् संन्यासी को उचित है कि ओंकार पूर्वक सप्त व्याहृतियों से विधिवत् प्राणायाम जितनी शक्ति हो उतना करे परन्तु तीन से न्यून प्राणायाम कभी न करे, यही संन्यासी का परम तप है।' ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका में वे लिखते हैं-'इस प्रकार प्राणायाम पूर्वक उपासना करने से आत्मा के ज्ञान का ढांकने वाला आवरण जो अज्ञान है वह नित्य प्रति नष्ट होता जाता है और ज्ञान का प्रकाश धीरे-धीरे बढ़ता जाता है।'

मनु महाराज कहते हैं कि जैसे अग्नि में तपाने और गलाने से धातुओं के मल नष्ट हो जाते हैं वैसे ही प्राणों के निग्रह से मन आदि इन्द्रियों के दोष भस्मीभूत हो जाते हैं। इसी सम्बन्ध में उनका कथन है कि ब्रम्हवित् व्यक्ति या संन्यासी के द्वारा जो विधि के अनुसार प्रणव अर्थात् ओंकार पूर्वक और भू: भुव: स्व: आदि सप्त व्याहृतियों के जप सहित तीनों प्रकार के वाह्य, अभ्यान्तर, स्तंभक प्राणायाम अथवा न्यून से न्यून तीन प्राणायाम किए जाते हैं.... वह उसका परम तप होता है। योगदर्शन में लिखा है-**तत: क्षीयते प्रकाशावरणम्** (2-52) अर्थात प्राणायाम के अभ्यास से आत्मा के ज्ञान को ढकने वाला अज्ञानता रूपी आवरण नष्ट हो जाता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी इस सम्बन्ध में लिखते हैं-'जैसे अत्यन्त वेग से वमन होकर अन्न जल बाहर निकल जाता है वैसे प्राण को बल से बाहर फेंक के बाहर ही यथाशक्ति रोक

(शेष पृष्ठ 16 पर)

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, हिमाचल के तत्वावधान में

डी.ए.वी. स्थापना दिवस आयोजित

डी.ए.वी. का हर शिक्षक, धर्म शिक्षक हो, प्रत्येक कक्षा में पांच मिनट नैतिकता का पाठ देवें

- पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सोलन में दिनांक 1 जून, 2017 को आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, हिमाचल प्रदेश के तत्वावधान में डी.ए.वी. स्थापना दिवस का आयोजन बड़े धूमधाम से किया गया। इस अवसर पर आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप सभा, हिमाचल प्रदेश की प्रधाना श्रीमती जे.काकड़िया के मार्ग दर्शन में इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य रत्न डॉ. पूनम सूरी प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली के द्वारा की गई। इस कार्यक्रम में डी.ए.वी. प्रबन्धक समिति के अधिकारी व पदाधिकारी तथा अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित थे जिनमें श्री एम.एल.सेखरी, श्री राजेन्द्र नाथ, स्नेहमयी श्रीमती मणि सूरी जी, आचार्य चैतन्यमुनि, माता सत्याप्रियायति, स्वामी करूणानंद जी, श्री सत्यपाल आर्य, श्री एस.के.शर्मा, ब्रिगेडियर ए.के.अदलखा, श्री आर.सी. जीवन, रीजनल डायरेक्टर व अनेक राज्यों पंजाब, हरियाणा, उत्तराखंड, चंडीगढ़, हिमाचल प्रदेश आदि से आए प्रधानाचार्य तथा लगभग 600 अध्यापक उपस्थित थे।

पदमश्री डॉ. पूनम सूरी जी प्रधान, डी.ए.वी. एवम् प्रादेशिक सभा उपस्थित जन समूह को सम्बोधित करते हुए।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि व अनेक गणमान्य अतिथियों का स्वागत हिमाचल प्रदेश के पारंपरिक लोक नृत्य नाटी व हिमाचली वाद्य यंत्रों द्वारा किया गया।

वैदिक मंत्रों के द्वारा इस कार्यकम का शुभारंभ हुआ। तत्पश्चात् पद्म श्री से अलंकृत डॉ. पूनम सूरी व आए अनेक गणमान्य अतिथियों के द्वारा अभिनंदन किया गया । डॉ. पूनम सूरी जी को भारत सरकार द्वारा पद्म श्री मिलने के उपलक्ष्य में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप सभा, हिमाचल प्रदेश की प्रधाना श्रीमती जे.काकड़िया व मंत्री श्रीमती शशि किरण और समस्त हिमाचल प्रदेश के स्कूलों द्वारा भावांजलि दी गई। हिमाचल के प्राचार्यों और अध्यापक वर्ग और अन्य कर्मचारियों का उल्लास देखते ही बनता था।

डॉ. पूनम सूरी जी ने वहां पर उपस्थित लोगों को संबोधित किया। उन्होंने डी.ए.वी. ब्रांड के बारे में विस्तार से जानकारी दी और बताया कि डी.ए.वी. संस्थाओं की अलग पहचान है। उन्होंने यह भी बताया कि डी.ए.वी. के प्रेरणा स्रोत महात्मा हंसराज, पं. लेख राम जी एवं गुरूदत्त विद्यार्थी हैं। हमें उनके आदर्शों को आगे बढ़ाना है। जिस तरह उन्होंने त्याग द्वारा इस संस्था को आगे बढ़ाया उसी तरह हमें भी डी.ए.वी. के लिए प्रयासरत् रहना है। इस अवसर पर उन्होंने स्वामी दयानन्द सरस्वती को सम्मान सहित याद किया। शिक्षकों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि डी.ए.वी. का हर शिक्षक धर्म शिक्षक है इसलिए सभी शिक्षकों को कर्तव्य है कि वे अपने विद्यार्थियों में नैतिक गुणों का समावेश करें। उन्होंने यह भी बताया कि ईश्वर मानव को बनाता है और डी.ए.वी. उनमें मानवता भरती है। अंत में उन्होंने इस बात पर विशेष बल दिया कि विद्यार्थियों में सुदृढ़ चरित्र का निर्माण हो जिससे उनका सर्वांगीण विकास हो सके।

दीप प्रज्ज्वलित कर समारोह का उद्घाटन करते पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी जी (सहपत्नीक) श्रीमती मणी सूरी जी एवम् चैतन्य मूनि जी मन्त्रोच्चारण करते हुए।

आचार्य चैतन्य मुनिजी ने बताया की शिक्षा एक साधना है इसलिए डी.ए.वी. के सभी शिक्षकों का कर्तव्य है कि वे अपनी साधना द्वारा

(शेष पृष्ठ 19 पर)

झूठ ना बोलना धर्म है तो सत्य बोलना बड़ा धर्म है

शायद मुझे यह बताने की जरूरत नहीं पड़ेगी कि असत्य किसे कहते हैं। एक जमाना था जब लोगों को यह बताना पड़ता था कि झूठ किसे कहते है पर आज सत्य क्या होता है बताना पड़ रहा है। पाप क्या है, यह किसी को बताने की जरूरत नहीं होती, पर पुण्य क्या है, यह बताना पड़ता है। छोटा-सा बच्चा जिसके दूध के दांत भी नहीं आये, वह भी आज झूठ बोलना सीख जाता है। क्योंकि घरों का वातावरण ही ऐसा है, जहाँ सत्य की जगह असत्य का ही बोलबाला है। माता-पिता, भाई-बहन सब कोई बात-बात में झूठ बोलते हैं, और बच्चे उन्हें देखते सुनते हैं, बच्चों को भी झूठ बोलने का संस्कार मिलता है, और वे बहुत जल्दी सीख जाते हैं, माता-पिता के संस्कार पकड़ लेते हैं। आपके जीवन में ऐसे प्रसंग आते होंगे जब आप घर में बैठे होते हैं, बाहर कोई बुला रहा हो, तब आप बच्चे को कहते हैं कि जा कह दे, पिताजी घर में नहीं हैं।'' बच्चा आपकी आज्ञा का पालन जरूर कर लेगा, पर उसके मन पर क्या संस्कार पड़ेगा, ''पिताजी झूठ बोल रहे हैं।''

एक वकील साहब थे। झूठे मुकदमे लड़ते थे। पत्नी ने एक दिन-''इतना झूठ मत बोला करो, भगवान से डरो।''

वकील साहब बोले-''झूठ न बोलें तो वकालत ही डूब जायेगी, जो जितना अच्छा झूठ बोलेगा, वह उतना ही बड़ा वकील होगा।'' बच्चे ने पिताजी के शब्द सुन लिए। एक दिन वकील साहब बाहर से आते गर्म-गर्म जलेबियाँ लाए, बच्चे को दी, जा घर में ले जा। दो-तीन बच्चे थे। सबने मिलकर बीच में ही गटागट खाली। वकील साहब को मालूम हुआ कि जलेबी घर में नहीं पहुँची है, तो बच्चों को पूछा-जलेबी तुमने खाई? उसने कहा-''नहीं?'' वकील साहब को गुस्सा आया। डांटा-अभी से झूठ बोलना सीख गया? एक-दो चपत लगाई, तो उसने सच बता दिया कि हम बच्चों ने मिलकर खाली। वकील साहब ने डॉक्टर कहा-''खाई तो खाई, बता झूठ क्यों बोला?''

बच्चे ने रोते हुए कहा-''मुझे भी वकील बनना है, आप ही ने उस दिन कहा था, जो जितना ज्यादा झूठ बोलता है वह उतना ही बड़ा वकील होता है।''

तो बच्चों में आज झूठ, के बुरे संस्कार घर करते जा रहे हैं, उसका मुख्य कारण है-घर का वातावरण। माता-पिता का व्यवहार। आप बच्चों को सच बोलने की शिक्षा देते हैं और स्वयं झूठ बोलते हैं, तो उसका क्या असर होगा? हम देखते हैं बहुत से पिता स्वयं मुँह से सिगरेट का धुआँ निकाल रहे हैं और बच्चों से कहते हैं-''बेटा! सिगरेट मत पीना।'' कोई बच्चा आपसे पूछ ले-''पिताजी! फिर आप क्यों पीते हैं?'' तो क्या उत्तर है आपके पास? बच्चे नकल प्रिय होते हैं, उनके मन पर उपदेश और शिक्षा का उतना असर नहीं होता, जितना व्यवहार का होता है। वे जैसा देखते हैं वैसा करते हैं। धूर्तता, ठगाई, परनिन्दा आदि को भी असत्य में गिना गया है। तो यह सब असत्य के भाई बंधु हैं। सिर्फ झूठ बोलना, असत् को सत् बताना मात्र ही असत्य नहीं है। यह तो असत्य का सर्व सामान्य रूप है। मन में और वचन में यह जो कपट का रूप है वह भी असत्य में गिना गया है।

कहना कुछ और करना कुछ ऊपर मधुरता का दिखावा, आडम्बर और भीतर में कटुता, इसे भी असत्य ही कहा जायेगा। कोई आदमी किसी को मीठा बोलकर ठगता है, लालच दिखाकर अपने जाल में फांसता है। उसे गलत रास्ता बताकर कष्ट में डालता है। किसी की गुप्त बात प्रकट करके परस्पर में भेद डालता है, प्रीति तुड़वाता है तो यह सब असत्य का आचरण है।

सत्य-असत्य का स्वरूप सामने आने पर आपको लगता होगा-आज का जन-जीवन कितना सत्यमय है और कितना असत्यमय? आज जिधर भी देखो असत्य का बोलबाला है। लोग कहते हैं-सत्य का बोलबाला है, पर आचरण इससे उलटा कर रहे हैं। सत्य की बात मुँह पर है, किन्तु जीवन में पद-पद पर असत्य का जहर घोलते जा रहे हैं।

इस प्रकार आज के जन-जीवन में असत्य चिन्तन, असत्य आचरण, असत्य भाषण बढ़ता ही जा रहा है। इससे रौद्र ध्यान की वृद्धि होती है, परिणामों की कलुषता बढ़ती है। कलुष परिणामों से मनुष्य का पतन होता है। आत्मा की पवित्रता, मन की उज्ज्वलता और आत्मबल का नाश होता है। परस्पर अविश्वास और भय का वातावरण बनता है। एक दूसरे के प्रति शंका, आशंका और धोखाधड़ी की भावना बनती है। इस तरह जीवन में चिंता, भय और संदेह छाया रहता है।

एक व्यापारी के यहां एक लड़का मुनीम था। बोलचाल में वह बड़ा चालू था। पास में ही एक दूसरा व्यापारी था। दोनों में प्रतिस्पर्धा चलती थी। सेठ ने मुनीम से कहा-''देखो अपने पड़ौसी का ध्यान रखा करो, कौन-कौन बाहर के व्यापारी आते हैं, क्या माल बेचता है, किस भाव बेचता है, सब रिपोर्ट रखा करो। इस काम के लिए तुम्हें स्पेशल तनख्वाह दूँगा।'' बस मुनीम को स्पेशल तनख्वाह का लालच आ गया। उसने पड़ौसी के मुनीम से दोस्ती की, उसके साथ घूमने जाता, सिनेमा जाता और होटलों में खाता-पीता। उससे दुकान के भेद पूछने लगा। एक दिन पड़ौसी सेठ ने अपने मुनीम को उस मुनीम के साथ देखा तो उसे शक हो गया। वह समझ गया, उसने भी अपने मुनीम को वही सीख दी जो पड़ौसी ने अपने मुनीम को दी थी। अब परिणाम यह हुआ कि उधर की बातें इधर आने लगीं और इधर की सब बातें उधर जाने लगीं। दोनों मुनीमों को लालच का चस्का लग गया। कुछ ही दिनों में दोनों के भाव-ताव, खरीददार, व्यापारी आदि टकराने लगे और यह भेद खुलने लगा कि अपनी बात उधर जाती है। आखिर परिणाम यह हुआ कि धीरे-धीरे दोनों व्यापारियों की गुप्त बातें सब बाहर आने लगीं और व्यापार दबने लग गया। जब सारा भंडा फूटा तो दोनों ही मुनीमों को वहाँ से निकाल दिया गया।

अतः जिस शस्त्र का प्रयोग आप दूसरों के लिए करना चाहते हैं, वह कभी-कभी अपने ऊपर भी चल जाता है और तब आपको पता चलता है कि यह वृत्ति कितनी क्रूर और कितनी निकृष्ट है।

असत्य सिर्फ असत्य तक ही सीमित नहीं रहता। वह धीरे-धीरे हिंसा, चोरी आदि के रूप भी धारण करने लग जाता है। जैसे फोड़ा प्रारम्भ में छोटा सा होता है और थोड़ा-थोड़ा दर्द करता है, किन्तु जैसे-जैसे उसका विष फैलता है वैसे-वैसे दर्द बढ़ने लगता है। शरीर में वह बेचैनी, बुखार आदि अनेक बीमारियों को जन्म देता जाता है। वैसे

टंकारा ऋषि बोधोत्सव 2017 के चित्रों को देखने और डाऊनलोड करने के लिए इंटरनेट के माध्यम से www.facebook.com/ajaytankarawala पर जायें और लाइक व शेयर अवश्य करें।

ही यह असत्य का फोड़ा भी है। अपने असत्य को छुपाने, अपनी ठगाई को सफल करने के लिए मनुष्य हिंसा का मार्ग पकड़ता है। वह हत्याएँ, तोड़-फोड़, लूट-खसोट करता है, आतंक फैलाता है, चोरी करता है। इस प्रकार असत्य का फोड़ा अनेक प्रकार के रौद्र रूप धारण कर लेता है। असत्य की अनर्थ परम्परा बड़ी लम्बी होती है।

क्या आप भी अपनी परीक्षा लेंगे? क्या आपके मन में यह दृढ़ विश्वास है कि आपने प्रत्येक कार्य को परमात्मा देख रहा है? सर्वज्ञ और सर्वदर्शी प्रभु से आपका कोई भी कार्य, कोई भी मानसिक विचार, संकल्प छिपा नहीं रह सकता। यदि सचमुच में आप ऐसा अनुभव करते हैं, और इस बात को सोचकर पापों से डरते हैं तो फिर मानना चाहिए कि आप दुर्गति से बच सकते हैं। जिसे पाप का डर है, वह कहीं भी रहे। वह प्रत्येक स्थान पर अपना कल्याण साध सकता है। झूठ ना बोलना धर्म है तो सत्य बोलना उससे भी बड़ा धर्म है।

अजय टंकारावाला

गौ-दान : महा-दान

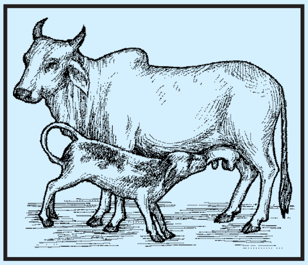

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से **20,000/-** रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं

अथवा

गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 12,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

-: निवेदक :-

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

याज्ञिक परम्परा में महर्षि दयानन्द का अप्रतिम योगदान

❒ कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री, देहरादून

उवट, महीधर और सायणाचार्य आदि भाष्कारों का विचार था कि वेद में वर्णित अग्नि, इन्द्र, वरूण, मित्र आदि कल्पित स्वर्ग में रहने वाले देवता हैं। ये देवता पृथ्वी पर दिखाई देने वाले अग्नि, वायु और जलादि पदार्थो का और आकाश में दिखाई देने वाले सूर्य, चन्द्रमा और उषा आदि के अधिष्ठात्री देवता माना जाते हैं। इस प्रकार से इन देवताओं के दो प्रकार के स्वरूप हो जाते हैं। एक स्वरूप अग्नि, जल, वायु आदि के रूप में जड़ पदार्थ के रूप में रहता है और दूसरा स्वरूप अधिष्ठात्री देवता के रूप में मनुष्यों की भांति प्राणधारी व चेतनायुक्त शरीर के रूप में रहता है। उपरोक्त भाष्यकारों के विचार से इन अधिष्ठात्री देवताओं को प्रसन्न करने के लिए यज्ञों में इनसे सम्बन्धित मन्त्रों की आहुतियां दी जाती हैं। यह माना जाता है कि ये देवता अदृश्य रूप धारण करके यज्ञ में उपस्थित होकर इन पदार्थो का भक्षण करते हैं। वेदमन्त्रों के रूप में अपनी स्तुतियों को सुन कर ये प्रसन्न हो जाते हैं और यजमान की उस कामना जिसके लिए यज्ञ किया गया है, पूर्ण करते हैं। यह भी माना जाता था कि इन यज्ञ–याग करने वालों को मरणोपरान्त स्वर्ग में भी भेज देते थे। स्वर्ग में इन्हें देवताओं की भांति ही सुखभोग प्राप्त होते थे।

महर्षि दयानन्द के अनुसार यज्ञों का वास्तविक स्वरूप– महर्षि ने आर्योद्देश्यरत्नमाला में यज्ञ की परिभाषा इस प्रकार की है–'जो अग्निहोत्र से लेकर अश्वेमधपर्यन्त, वा जो शिल्पव्यवहार और पदार्थविज्ञान है, जो कि जगत् के उपकार के लिए किया जाता है, उसको यज्ञ कहते हैं।

महर्षि दयाननद द्वारा स्थापित मान्यता– (1) देवताओं को आहूत करने पर वे आकर हवि का भक्षण नहीं करते हैं– महर्षि दयानन्द को अधिष्ठात्री देवों की सत्ता स्वीकार्य न थी। उनके द्वारा तत्कालीन यज्ञ परम्परा का घोर विरोध किया गया। अपने वेदभाष्य व सत्यार्थप्रकाश में उन्होंने देवतावाची पदों का सही अर्थ प्रस्तुत किया। सप्तम समुल्लास में देवता की परिभाषा देते हुए महर्षि कहते हैं–**'देवता'** दिव्यगुणों से युक्त होने के कारण कहलाते हैं, जैसी कि पृथिवी। परन्तु इसको कहीं ईश्वर या उपासनीय नहीं माना है। महर्षि ने अपने वेदभाष्य में अग्नि, वायु आदि मन्त्रों के देवतावाची पदों का अर्थ स्वर्ग विशेष में रहने वाले ओर मनुष्य आकृति के किसी प्राणी के रूप में नहीं किया है अपितु प्रकरण के अनुसार मन्त्रों में प्रयुक्त विशेषण के आधार पर जगत् सृष्टा परमात्मा, राष्ट्र का शाषक, राज्य कर्मचारी, अध्यापक, उपदेशक और जगत् प्रत्यक्ष दिखाई देने वाले अग्नि, वायु, जल, आकाश आदि जड़ पदार्थो के रूप में किया है। चारों वेदों का अध्ययन करने पर कहीं पर भी ऐसा उल्लेख नहीं मिलता है कि अग्नि, वायु, जल, आदि जड़ पदार्थो के मनुष्य जैसे शरीरधारी चेतन अधिष्ठात्री देवता भी पाये गये हों। इस प्रकार पारम्परिक यज्ञकर्त्ताओं की यह धारणा कि यज्ञों में मन्त्रों के द्वारा देवताओं को आहूत करने पर वे आकर हवि का भक्षण करते हैं और इस कृत्य से प्रसन्न होकर यज्ञकर्त्ता का कल्याण करते हैं, वेद के प्रतिकूल है। महर्षि ने अपने वेदभाष्य से यह सिद्ध कर दिया कि वेद में वर्णित देवताओं का वह स्वरूप नहीं है जो मध्यकाल के विनियोगकारों और सायणाचार्य आदि भाष्यकारों ने वर्णित किया है।

(2) स्वर्ग के सम्बन्ध में महर्षि की अवधारणा– महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश के नवें समुल्लास में स्वर्ग की परिभाषा देते हुए कहा है कि सुखविशेष स्वर्ग और दु:खविशेष भोग करना नरक कहलाता है। 'स्व:' सुख का नाम है। **'स्वः सुखं गच्छति यस्मिन् स स्वर्ग:' अतो विपरीतो दु:खभोगो नरक इति'** जो सांसारिक सुख है वह सामान्य स्वर्ग और जो परमेश्वर की प्राप्ति से आनन्द है, वही विशेष स्वर्ग कहलाता है। महर्षि के अनुसार आकाश के किसी स्थान विशेष में स्वर्गलोक नामक कोई स्थान नहीं है। वे किसी काल्पनिक स्वर्गलोक की सत्ता को स्वीकार नहीं करते हैं। उनके अनुसार सुख–समृद्धि से परिपूर्ण जीवन ही स्वर्ग का जीवन है। सायणादि आचार्यो और मध्ययुगीन याज्ञिकों का यह विचार था कि अग्नि, वायु, इन्द्र आदि देवता वेदमन्त्रों के द्वारा आहूत किए जाने पर न केवल हवियों का भक्षण करते थे अपितु प्रसन्न होकर यजमान की कामनाओं को पूर्ण करते थे और उसके मरने के बाद उसे स्वर्गलोक में भेज देते थे। ऐसा कोई स्वर्गलोक आजतक किसी को दिखाई नहीं दिया है। इस प्रकार स्वर्गलोक और उसके विपरीत नरकलोक की कल्पना पूर्णत: असत्य व भ्रामक है, जिसका महर्षि ने कठोर शब्दों में निन्दा की है।

(3) यज्ञों का वास्तविक प्रयोजन–महर्षि ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में वेदविषयविचार नामक अध्याय के अन्तर्गत कहते हैं कि सुगन्ध आदियुक्त द्रव्य अग्नि में डाला जाता है, उसके अणु अलग–अलग होके आकाश में रहते ही हैं, क्योंकि किसी द्रव्य का वस्तुता से अभाव नहीं होता। इससे वह द्रव्य दुर्गन्धादि दोषों का निवारण करने वाला अवश्य होता है। फिर उससे वायु और वृष्टिजल की शुद्धि होने से जगत् का बड़ा उपकार और सुख अवश्य होता है। इस कारण से यज्ञ को करना चाहिए। पुन: इस शंका का निवारण करते हुए कि अतर और पुष्प आदि घरों में रखने से भी वायु और जल की शुद्धि की जा सकती है, महर्षि कहते हैं कि यह कार्य अन्य किसी प्रकार से सिद्ध नहीं हो सकता है, क्योंकि अतर और पुष्पादि का सुगन्ध तो उसी दुर्गन्ध तो उसी दुर्गन्ध वायु में मिल के रहता है, उसको छेदन करके बाहर नहीं निकल सकता और न वह ऊपर चढ़ सकता है, क्योंकि उसमें हलकापन नहीं होता है। उसके उसी अवकाश में रहने से बाहर का शुद्ध वायु उस ठिकाने में जा भी नहीं सकता क्योंकि खाली जगह के बिना दूसरे का प्रवेश नहीं हो सकता है। फिर सुगन्ध और दुर्गन्ध वायु के वहीं रहने से रोगनाशादि फल भी नहीं होते हैं। महर्षि ने वेद मन्त्रों का भाष्य करते समय कई स्थलों पर यज्ञ करने के प्रयोजन का उल्लेख किया है। कुछ उदाहरण निम्नानुसार हैं–

1. पर्यावरण की शुद्धि–

(1) विद्वानों को ईश्वर की प्रार्थना सहित ऐसा अनुष्ठान करना चाहिए कि जिससे पूर्णविद्या वाले शूरवीर मनुष्य तथा वैसे ही गुणवाली स्त्री, सुख देनेहारे पशु, सभ्य मनुष्य, चाही हुई वर्षा, मीठे फलों से युक्त अन्न और जल की शुद्धि से ही सब पदार्थो की शुद्धि होती है, यह जानना चाहिए। (यजु. भा. 22.25)

(2) जो मनुष्य आग में सुगन्धि आदि पदार्थो को होमें, वे जल

आदि पदार्थो की शुद्धि करने हारे हो पुण्यात्मा होते हैं और जल की शुद्धि से ही सब पदार्थो की शुद्धि होती है, यह जानना चाहिए। (यजु. भा. 22.25)

(2) ऋगवेदादिभाष्यभूमिका के वेदविषयविचार अध्याय में महर्षि ने वर्णित किया है कि यज्ञ में जो भाफ उठता है, वह भी वायु और वृष्टि के जल को निर्दोष और सुगन्धित करके सब जगत् को सुख करता है, इससे वह यज्ञ परोपकार के लिए ही होता है। महर्षि ने इस सम्बन्ध में कहा है-ऐतरेय ब्राह्मण का प्रमाण है कि (यज्ञोऽपि त.) अर्थात् जनता नाम जो मनुष्यों का समूह है, उसी के सुख के लिए यज्ञ होता है और संस्कार किये द्रव्यों का होम करने वाला जो विद्वान मनुष्य है, वह भी आनन्द को प्राप्त होता है, क्योंकि जो मनुष्य जगत् का जितना उपकार करेगा उसको उतना ही ईश्वर की व्यवस्था से सुख प्राप्त होगा। इसलिए अर्थवाद यह है कि अनर्थ दोषों को हटा के जगत् में आनन्द को बढ़ाता है। परन्तु होम के द्रव्यों का उत्तम संस्कार ओर होम करने वाले मनुष्यों को होम करने की श्रेष्ठ विद्या अवश्य होनी चाहिए। सो इसी प्रकार के यज्ञ करने से सबको उत्तम फल प्राप्त होता है, विशेष करके यज्ञकर्ता को, अन्था नहीं।

2. अन्तःकरण की शुद्धि और सुख-

(1) जो विद्वानों के सुख, पढ़ने, अन्तःकरण के विशेष ज्ञान तथा वाणी और पवन आदि पदार्थो की शुद्धि के लिए यज्ञक्रियाओं को करते हैं, वे सुखी होते हैं। (यजु. 22.20)

(4) यज्ञों में विनियोग- महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेद के तक और माध्यन्दिन शुक्ल यजुर्वेद संहिता के सम्पूर्ण मन्त्रों का भाष्य किया। उससे पूर्व उवट, महीधर और सायण इसका भाष्य कर चुके थे। उवट और महीधर के भाष्य मुख्य रूप से कात्यायन-श्रौतसूत्र में विनियोजित कर्मकाण्ड का अनुसरण करते हैं और सायण के भाष्य भी इस प्रकार से कर्मकाण्डीय परम्परा का अनुसरण करते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती का मत है कि पूर्वकृत विनियोग कोई अटल रेखा नहीं कि उसका अनुसरण करना अनिवार्य हो। सभी आचार्यो ने एक मन्त्र का विनियोग एक प्रकार से ही नहीं किया है। उन्होंने एक मन्त्र का अन्य प्रकार से भी विनियोग किया है। इससे यह प्रतीत होता है कि मन्त्र का पूर्वकृत विनियोगों के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। महर्षि ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में पूर्वकृर्त विनियोगों के सम्बन्ध में कहा है कि जो युक्तिसिद्ध एवं वेदादि प्रमाणों के अनुकूल हो तथा जो मन्त्रार्थ के अनुसार हो, वह विनियोग ग्राह्या हो सकता है। महर्षि ने स्वयं को पूर्वकृत विनियोगों के बन्धन में नहीं बांधा और ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में ही कहा कि वेद केवल कर्मकाण्ठ नहीं है, ज्ञानकाण्ड, उपासनाकाण्ड और विज्ञानकाण्ड परक अर्थ भी किए जाने चाहिए। उनके भाष्य से वेद में अग्नि, वायु आदि वेदवर्णित देवताओं से अनेक देवों की पूजा की भ्रान्ति नहीं होती है। अन्य भाष्यकारों ने अग्नि, वायु आदि से परमेश्वर से भिन्न अभिमानी देवों का ग्रहण किया है, वहीं महर्षि ने उन्हें, एक परमेश्वर का गुणवाची माना है।

(5) यज्ञों में पशुवध का निरोध- कर्मकाण्ड के अनुसार यजुर्वेद के प्रथम अध्याय से द्वितीय अध्याय के अठाईसवें मन्त्र तक दर्शपूर्णमास यज्ञ है। महीधर की कर्मकाण्डपरक व्याख्या में षष्ठ अध्याय के मन्त्र 7 से 22 तक अग्नीषोमीय पशु का प्रयोग आता है। इसमें छाग (बकरे) को देवताओं के लिए काटा जाता है। मन्त्र 7 से 19 तक पशु को मारने आदि की विधि का वर्णन किया गया है। मन्त्र 20 के अनुसार अध्वर्यु मृत पशु के सब अंगो को स्पर्श करके कहता है कि इस पशु के अंग-अंग में प्राण निहित किया और पशु को कहता है कि तुम जीवित होकर देवताओं के समीप जाओ। उसके बाद प्रतिप्रस्थाता नामक ऋत्विज् पहले से ही पृथक् रखे हुए पशु के पिछले हिस्से को ग्यारह भागों में बांट कर, ''समुद्रं गच्छ स्वाहा' आदि ग्यारह मंत्राशों से आहुति देते हैं। (मन्त्र 21)। अन्त में सब यजमान और ऋत्विज् वरूण से प्रार्थना करते हैं कि वह उन्हें भय से मुक्त करें। (मन्त्र 22) महर्षि दयानन्द ने उक्त मन्त्र का अर्थ करते हुए कहा हैं कि यह उस अवसर का है जब बालक के माता-पिता विद्याध्ययनार्थ उसे गुरुकुल में प्रविष्ट कराने लाये हैं आचार्य अपने इस नवागत शिष्य को सम्बोधित करके कहता है-हे शिष्य! मैं समस्त ऐश्वरयुक्त, वेदविद्या प्रकाश करने वाले परमेश्वर के उत्पन्न किये हुए इस जगत् में सूर्य और चन्द्रमा के गुणों से वा पृथिवी के हाथों के समान धारण और आकर्षण गुणों से प्रीति करते हुए तुझको जो ब्रह्मचर्य धर्म के अनुकूल जल और औषधि हैं, उन जल और गोधूम आदि अन्नादि पदार्थो से नियुक्त करता हूँ। तुझे मेरे समीप रहने के लिए तेरी जननी अनुमोदित करे, सहोदर भाई अनुमोदित करे, मित्र अनुमोदित करे और तेरे सहवासी अनुमोदित करें। अग्नि और सोम के तेज ओर शांति गुणों में प्रीति करते हुए तुझको उन्हीं गुणों से ब्रह्मचर्य के नियम-पालन के लिए अभिषिक्त करता हूँ। बकरे के यज्ञ में बलि करने के सम्बन्ध में माता-पिता, भाई और मित्र अनुमोदित करें, यह सन्दर्भ के प्रतिकूल है और इससे सिद्ध होता है कि इस प्रसंग में यह अर्थ पूर्णतः वास्तविक अर्थ से भिन्न व प्रतिकूल है। इससे यह भी प्रतीत होता है कि वेद में बलात पशु बलि सम्बन्धी प्रसंग डालने का प्रयास किया गया है। इसी प्रकार के प्रसंग अश्वमेध यज्ञ के सम्बन्ध में यजुर्वेद के 22वें से 25वें अध्याय में, पुरुषमेध यज्ञ के सम्बन्ध में पशुबलि परक अर्थ किए गए हैं। इसमें घोड़े की बलि तथा महिषी के साथ मृत घोड़े के सोने के अश्लीलता भरे प्रसंग हैं। कर्मकाण्डियों द्वारा यह माना जाता था कि घोड़ा पुनर्जीवित होकर स्वर्ग चला जाता है। महर्षि दयानन्द अश्वमेध के इस रूप से सहमत नहीं थे और न इसे वेद व शतपथ ब्राह्मण के अनुकूल समझते थे। महर्षि ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में राजप्रजाधर्म में लिखा है कि **'राष्ट्रपालनमेव क्षत्रियाणाम् अश्वमेधाख्यो यज्ञो भवति, नार्श्व हत्वातदङ्गानां होमकरणं चेति'** अर्थात् राष्ट्र का पालन करना ही क्षत्रियों का अश्वमेध यज्ञ है, घोड़े को मारकर उसके अंगों को होम करना नहीं। यजुर्वेद के 30 व 31वें अध्याय में भी पुरूषमेध यज्ञपरक वर्णन मिलते हैं। किसी समय इस यज्ञ में पुरुषों को यूपों में बांध कर बलि देने की प्रथा थी। महर्षि दयानन्द ने 30वें अध्याय में आये पदों का उचित अर्थ करते हुए बताया कि इसमें राजा के कर्तव्य बताते हुए कहा गया है कि अमुक-अमुक गुणों वाले पुरुष या स्त्री को आप राष्ट्र में उत्पन्न कीजिए या नियुक्त कीजिए और अमुक-अमुक दुष्ट आचरण करने वाले पुरुष या स्त्री को आप दूर कर दीजिए। इसी प्रकार कर्मकाण्डानुसार यजुर्वेद के 35वें अध्याय में इन महीधर आदि भाष्कारों ने पशु-बलि परक अर्थ किए हैं। यजुर्वेद का मन्त्र 35.20 प्रस्तुत है-

वह वपां जातवेदः पितृभ्यो यत्रैनान् वेत्थ निहितान् पराके।
मेदसः कुलया उप तान्स्रवन्तु सत्या एषामाशिषः संनमन्तां स्वाहा।।

महीधर ने इस मन्त्र का विनियोग चर्बी (वपा) का होम करना

(शेष पृष्ठ 16 पर)

महर्षि दयानन्द और वेद

❑ खुशहाल चन्द्र आर्य

महर्षि दयानन्द का वेदों पर बड़ा अटूट विश्वास था। वे वेदों को ईश्वरीय-ज्ञान व सब सत्य विद्याओं के ग्रन्थ मानते थे। साथ ही उनका यह पूर्ण विश्वास था कि यदि विश्व में कभी सुख व शान्ति स्थापित हो सकती है, तो वह वेदों के अनुसार चलने से ही हो सकती है। इसके अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं। कारण उनकी यह मान्यता थी कि ईश्वर ने सृष्टि के आदि में चार ऋषियों जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य व अंगीरा थे उनके मुख से चार वेद जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद हैं, उच्चारित करवाये जिनमें ईश्वर ने वैसे तो प्राणी मात्र के लिए, नहीं तो विशेष कर मनुष्य-मात्र के लिए बताये जिनमें बताया है कि मनुष्य को क्या काम करने चाहिए और क्या काम नहीं करने चाहिए जिससे वह धर्म, अर्थ, काम तीनों पुरुषाओं को धर्म के अनुसार करते हुए अन्तिम पुरुषार्थ मोक्ष को प्राप्त कर सके जिसको पाने के लिए जीव को ईश्वर धरती भेजता है। इसीलिए जिस प्रकार श्री राम को धनुष वाला बोलते हैं, भगवान श्री कृष्ण को बंशी वाला बोलते हैं। इसी प्रकार महर्षि दयानन्द को वेदो वाला बोलते हैं। महर्षि दयानन्द की वेदों सम्बन्धी निम्नलिखित मान्यताएं थी।

1. वेद, ईश्वरीय-ज्ञान है:-महर्षि जी ने आने से पहले, वेदों को ऋषि मुनियों द्वारा बनाए हुए ग्रन्थ मानते थे। परन्तु महर्षि दयानन्द ने अपने सद्गुरु विरजानन्द की गोद में अंदाज तीन साल बैठकर सही व्याकरण पतंजलि कृत महाभाष्य और अष्टाध्यायी पढ़कर वेदों के मन्त्रों का सही अनुवाद करना सीख लिया, जो पहले आचार्य सायण, महिधर व डब्बर आदि ने वेदों के मन्त्रों का गलत अर्थ लगाकर उनको केवल कर्मकाण्ड के ग्रन्थ समझते थे और उनके हिंसा परक व अश्लील अर्थ लगा दिये थे जिससे लोगों की वेदों के प्रति अश्रद्धा हो गई और उन्हें केवल गड़रियों के गीत समझने लगे थे। महर्षि जी ने वेद मन्त्रों के प्रसंग को समझकर सही अर्थ लगाये जिससे यह ज्ञात हुआ कि वेदों को ईश्वर ने बनाया है। मनुष्यों में वेद मन्त्रों को बनाने की क्षमता ही नहीं है। यह महर्षि जी का मनुष्य-मात्र पर एक बहुत बड़ा उपकार है जिसे भूलना नहीं चाहिए।

2. वेद, सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है:- महर्षि दयानन्द का मानना था कि वेदों में सब सत्य विद्यायें हैं। पहले के वेद भाष्यकार वेदों को केवल कर्मकाण्ड के ग्रन्थ ही मानते थे। उनको अनादि न मानकर उनमें इतिहास व हिंसा यानी पशुबलि का वर्णन भी है, ऐसा मानते थे, परन्तु महर्षि जी वेदों को सृष्टि के आदि में ईश्वर का दिया हुआ ज्ञान है, जो सब सत्य विद्याओं का संग्रह है जिनके अनुसार चलने से ही मनुष्य मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। ऐसा बताया।

3. वेद-ज्ञान मनुष्यों के लिए संविधान के रूप में है:- जिस प्रकार एक राष्ट्र के लिए उसका कोई संविधान होता है, उसी के अनुसार चलने से राष्ट्र उन्नति व समृद्धि को प्राप्त होता है। उसी प्रकार ईश्वर ने वेद-ज्ञान मनुष्यों को संविधान के रूप में दिया है, जिसको पढ़कर तथा उसको अपने जीवन में उतारकर मनुष्य अपनी उन्नति तथा दूसरों की उन्नति करता हुआ, मोक्ष को प्राप्त कर सके जो जीवन का अन्तिम व मुख्य उद्देश्य है। यहां पर बतलाना भी आवश्यक है कि मोक्ष क्या चीज है? जो मनुष्य अपने पूरे जीवन में केवल परोपकार के ही काम करता हैं, जिनका खाना-पीना, उठना-बैठना, सोना-जागना सब कार्य परहित के लिए होते हैं जैसे भगवान श्रीकृष्ण व महर्षि दयानन्द का जीवन था। ऐसे महापुरुष मृत्यु के बाद मोक्ष को प्राप्त होते हैं और अनन्त काल तक ईश्वर के सान्निध्य में रहते हुए परम आनन्द को पाते हैं।

4. वेदोनुसार चलने से ही विश्व का कल्याण है:- जब तक विश्व में वेदों का पढ़ना-पढ़ाना प्रचलित था, तब तक विश्व में परस्पर प्रेम था और सब लोग आनन्द व सुख से अपना जीवन यापन करते थे। महाभारत से करीब एक हजार वर्ष पहले वेदों का पठन-पाठन कम हो गया और महाभारत में अधिकतर विद्वान, योद्धा आचार्य, पुरोहित आदि समाप्त हो जाने से वेदों का पठन-पाठन प्राय: लुप्त ही हो गया, तभी से विश्व में अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड का बोल-बाला हो गया। ईश्वर की असीम कृपा से सन् 1900 की शताब्दी में महर्षि दयानन्द इस धरती पर आये। उन्होंने अपने बहुत कठोर परिश्रम से सद्गुरु स्वामी विरजानन्द को ढूढ़ा और उसकी गोद में करीब तीन साल बैठकर व्याकरण पर पूरा अधिकार जमाया और फिर वेदों के सही अर्थ करके यह सिद्ध कर दिया कि वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है और सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। इसी को पढ़कर और उसी के अनुसार चलकर हम अपना व विश्व का कल्याण कर सकते हैं। इसी में ईश्वर ने मानव-मात्र को एकता का पाठ पढ़ाया है और पृथ्वी तुम्हारी माता है, तुम सभी उसी के पुत्र व पुत्रियां हो ''माता भूमि: पुत्रोडहमृ पृथिव्या:'' कहरक भ्रातृ भाव का पाढ पढ़ाया है और विश्व में शान्ति बनाये रखने का पाठ पढ़ाया है। ''वसुधैव कुटुम्बकम'' कहकर पूरे विश्व को एक परिवार बताया है। ऐसा एकता का सन्देश वेदों के अलावा और कहां मिल सकता है? अर्थात् कहीं नहीं।

5. वेदों में अन्ध विश्वास नहीं है:- वेदों में भूत-प्रेत, जादू-टोना, गण्डा-डोरी, सगुन-अपसगुन फलित ज्योतिष आदि नहीं हैं। परन्तु वेदों का पठन-पाठन कम हो जाने से स्वार्थी, मूर्ख व कम पढ़े लोगों ने इनका भय बिठा दिया जिससे अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड का बोल-बाला हो गया। महर्षि जी ने वेदों के आधार पर कहा कि भूत-प्रेत कोई योनि ही नहीं है। उन्होंने बताया कि भूत बीते हुए को कहते है और प्रेत मरे हुए शव को कहते हैं इसलिए भूत-प्रेत बोलना चालु हो गया। वास्तव में भूत-प्रेत कोई योनि नहीं है। दूसरा अन्ध विश्वास व पाखण्ड मूर्तिपूजा और अवतारवाद है। अवतारवाद के लिए लोगों की मान्यता है कि जब धरती पर अन्याय बढ़ जाता है तब अन्याय को नष्ट करने के लिए ईश्वर किसी न किसी रूप में अवतार लेता है। जैसे रावण अन्यायी को मारने के लिए राम का अवतार लिया और कंस अन्यायी को मारने के लिए कृष्ण के रूप में अवतार लिया। महर्षि दयानन्द ने कहा कि ईश्वर सर्वव्यापी, निराकार, अजर व अमर है। अवतार लेने के लिए ईश्वर को सर्वव्यापी न रहकर एक स्थान व्यापी, निराकार, अजर व अमर है। अवतार लेने के लिए ईश्वर को सर्वव्यापी न रहकर एक स्थान व्यापी होना पड़ेगा। निराकार न होकर साकार होना पड़ेगा और मनुष्य का शरीर धारण करने से उसे बूढ़ा भी होना पड़ेगा और मृत्यु को भी प्राप्त होना पड़ेगा, इसलिए ईश्वर के यह चारों गुण नष्ट हो जाते हैं, इसलिए ईश्वर अवतार नहीं ले सकता।

महर्षि का कहना है कि राम और कृष्ण, ईश्वर नहीं थे, वे महापुरुष थे। इसी प्रकार महर्षि जी ने मूर्त्ति पूजा के लिए भी कहा कि मूर्ति जड़ है, उसको किसी प्रकार का ज्ञान नहीं है। जड़ चीज कभी भी किसी का भला या बुरा नहीं कर सकती, इसलिए मूर्ति पूजा करना समय को बर्बाद करना है। सामान्य जन कह देता है कि मूर्ति पूजा मोक्ष प्राप्ति की सीढ़ी है पर महर्षि जी कहते हैं कि मूर्तिपूजा, मोक्ष प्राप्ति की सीढ़ी नहीं बल्कि खाई है जिसके अन्ध विश्वास रूपी खाई में पड़कर नष्ट हो जाता है।

6. वेदानुकूल चलने से ही विश्व शान्ति सम्भवः- उपर लिखी बातों से यह सिद्ध हो जाता है कि विश्व में शान्ति, वेदानुकूल चलने से ही सम्भव है। महाभारत से एक हजार वर्ष पूर्व तक विश्व में केवल वैदिक धर्म ही था, इसलिए विश्व में सुख व शान्ति थी। महाभारत के समय से ही वेद-ज्ञान प्रायः लुप्त होता जा रहा है। जिसके कारण विश्व में दुःख व अशान्ति का बाहुलय होता जा रहा है, इसलिए हमें महर्षि दयानन्द के सताए वेद-मार्ग को पुनः अपमाना होगा, तभी विश्व में सुख व शान्ति का होना सम्भव है।

- द्वारा गोविन्दराम आर्य एण्ड सन्स, 180 महात्मा गांधी रोड, दो तल्ला, कोलकत्ता-7, फोन-22183825 (033), 8232025590

टंकारा समाचार

के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं। **-प्रबन्धक**

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर **7000/-**रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

टंकारा समाचार

पाठकों से विनम्र निवेदन

आपका प्रिय टंकारा समाचार निरन्तर 20 वर्षो से प्रति माह प्रकाशित हो रहा है। हमारा यह प्रयास रहा है कि वेद प्रचार, वैदिक मान्यताओं, महर्षि दयानन्द सरस्वती का दर्शन आप तक सरलतम भाषा में पहुँचे। आप द्वारा दिये गये सहयोग से इसकी ख्याति दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। आप इसके मान्य आजीवन सदस्य है।

आप सभी आजीवन सदस्यों से अनुरोध है कि 200/- रूपये की राशि टंकारा समाचार के नाम चैक द्वारा या टंकारा समाचार के **खाता नम्बर 0130010101110898, बैंक पी.एन.बी. मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, IFSC Code-PUNB0466500** में सीधे जमा करके अथवा NEFT करवा कर टंकारा समाचार कार्यालय, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर सूचित करें अथवा मोबाइल नम्बर 09560688950 पर एस.एम.एस. या कॉल कर (अपना आजीवन सदस्यता नम्बर नाम पते सहित भेजें।) ताकि टंकारा समाचार आपको प्राप्त होता रहे। **(क्योंकि आजीवन सदस्य की राशि बढ़ा दी गई है।)** **-प्रबन्धक**

सत्य का महत्व

❒ नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

सत्य बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप। सत्य का मनुष्य के जीवन में बहुत महत्व है इसीलिए क्रान्तिदर्शी देव दयानन्द ने आर्य समाज के पहले पांच नियमों में सत्य के महत्व को स्थापित करते हुए सत्य शब्द का प्रयोग किया है। चौथे नियम में तो स्पष्ट निर्देश दिया है कि ''सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।'' महर्षि दयानन्द ने सत्य को परिभाषित करते हुए कहा है ''जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहलाता है व्यवहारभानु में देव दयानन्द मनुष्य के जीवन में सत्य के महत्व को स्थापित करते हुए लिखते हैं ''सब मनुष्यों को अत्यन्त उचित है कि झूठ को सर्वथा छोड़कर सत्य ही से सब व्यवहार करें, जिससे धर्म, काम और मोक्ष को प्राप्त होकर सदा आनन्द में रहें।''

सत्य के महत्व को स्थापित करते हुए वेद भगवान भी ''ऋतस्य धीतिर्वृजनानि हन्ति:'' ऋ. 4/23/8 अर्थात् सत्य का आचरण पापों को नष्ट कर देता है। इसे दूसरे शब्दों में कहें तो सत्य का आचरण मनुष्य को पापों से दूर कर देता है। झूठे अंधेरों की चट्टानें कितनी मजबूत क्यों ना हों सत्य के सूर्य के उदय होने के आभास मात्र से टूट कर खत्म हो जाती है। सत्य के सामने झूठ कभी नहीं टिक सकता और अंत में सदा सत्य की विजय होती है। सत्य की महिमा का वर्णन करते हुए महाभारत में कहा गया है ''सत्यं स्वर्गस्य सोपानम्।'' अर्थात् सत्य स्वर्ग की सीढ़ी है। मनुष्य की हर मनोकामना सत्य से ही पूरी होती है। सत्य का मार्ग चाहे जितना भी कांटो से भरा कष्ट से परिपूर्ण क्यों ना हो लेकिन सत्य के मार्ग पर चलकर मनुष्य अपने जीवन के लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेता है। सत्य से ही धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति होती है अत: मनुष्य को कभी किसी भी विपरीत परिस्थिति में भी सत्य को नहीं छोड़ना चाहिए। सत्य वह दिव्य दीपक है जो मनुष्य के आन्तरिक तम अविद्या को नष्ट भ्रष्ट कर देता है।

जो व्यक्ति सदा सत्य बोलता है समाज के लोग सदा उसकी बातों पर विश्वास करते हैं। सत्यवादी के साथ लोग नि:शंक और निश्चित होकर व्यवहार करते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि सत्यवादी व्यक्ति हमें धोखा नहीं देगा। इससे समाज के लोगों को सुख मिलता है। सत्यवादी सदा निर्भीक और चिन्तामुक्त होकर आनन्द से जीता है उसे कभी किसी से डर नहीं लगता। सत्यवादी को अपने हर कार्य के लिए परिवार समाज के लोगों का समर्थन मिलता है और समाज का समर्थन मिलने से उसका उत्साह बढ़ता है और वह सदा प्रसन्न रहता है। सत्य बोलने वालों की समाज की प्रतिष्ठा बढ़ती है और पूर्ण सत्यवादियों का यश युगों तक बना रहता है। सत्य बोलने वाले को कभी किसी के सामने बोलने में डर नहीं लगता और उसे कभी मानसिक तनाव नहीं होता अच्छी निश्चित नींद आती है। शरीर के सभी अंग-प्रत्यंग स्वस्थ रहते हैं। सत्यवादी सदा प्रसन्न, रोगमुक्त निश्चित रहता है। सत्यवादी की सभी योजनाएं पूरी होती हैं क्योंकि उसे अपनी सभी योजनाओं के लिए जब परिवार समाज का सहयोग मिलता है क्योंकि जनता को उसके सत्य आचरण के कारण पूरा विश्वास होता है कि सत्यवादी उनके सहयोग का सदा सदुपयोग ही करेगा। इसलिए सत्यवादी का भविष्य सदा उज्जवल होता है। सत्य बोलने से परिवार समाज और राष्ट्र में परस्पर विश्वास और प्रेम का वातावरण बनता है जिससे सभी को सुख मिलता है।

सत्य के महत्व को स्थापित करते हुए ही वेद भगवान ने मनुष्य मात्र को आदेश दिया 'वाच: सत्यमशीय।' अर्थात् मैं अपनी वाणी में सत्य को प्राप्त करूं। इससे आगे बढ़कर सत्य के साथ माधुर्य को धारण करने का निर्देश देते हुए कहा गया **सत्यं ब्रूयात प्रियं ब्रूयान ब्रूयात्सत्यमप्रियम्।** मनुस्मृति अर्थात् सत्य बोलो, प्रिय भाषा में बोलो, सत्य को कटु भाषा में मत बोलो। क्योंकि मनुष्य का शरीर आत्मा का मंदिर, सर्व अन्तर्यामी परमात्मा का निवास है अतएव इसे सदा सत्य आचरण से स्वच्छ रखें और कभी झूठ बोलकर गंदा ना करें। सरलता को रथ और सत्य को शस्त्र बनाकर जीवन के संग्राम में कूद पड़ो क्योंकि 'सत्यमेव जयते नानृतम्' सदा सत्य की ही विजय होती है असत्य की नहीं। इसीलिए मनुष्य के लिए यही श्रेयस्कर है कि वह जीवन में सदा सत्य व्रतों को धारण करे।

– 602, जी.एच. 53, सैक्टर-20, पंचकूला, मो. 09467608686

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलों में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्त्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषि भक्त यहां कई वर्षो से पधार रहे है यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते हैं कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मीयता बनी रहे। पिछले वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया है कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष **1000/-** रूपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाए और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाए। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अधिक-से-अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि जन्मस्थान से जुड़ सकते हैं। 10000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक

शिवराजवती आर्या — उप-प्रधाना

रामनाथ सहगल — (मन्त्री)

शिष्टाचार

❒ नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

मनुष्य का आचरण एक दर्पण के समान है जिसमें उसका प्रतिबिम्ब साफ दिखाई देता है। उसके शिष्टाचार से पता चलता है कि वह कुलीन है अथवा अकुलीन। जिस प्रकार एक साफ गिलास में यदि पानी भर दिया जाये तो भी वही पीने के योग्य नहीं हो सकता ठीक उसी प्रकार सुन्दर शरीर होने के बावजूद यदि मनुष्य का आचरण शिष्ट नहीं है तो वह सम्मान नहीं पा सकता। शिष्टाचार मनुष्य के आंतरिक सौन्दर्य का पैमाना है। शास्त्र पढ़कर ज्ञान होने पर भी यदि उस पर आचरण ना किया जाये तो उस ज्ञान का कोई लाभ नहीं वस्तुतः वह पढ़ा लिखा मूर्ख है। विद्वान वही है जो पढ़े और सुने हुए वेदादि शास्त्रों के अनुकूल शिष्ट आचरण करता है। वेदादि शास्त्रों को पढ़े चिंतन मनन करे लेकिन उस एक बार पढ़कर चिंतन मनन किये ज्ञान पर आचरण बार-बार लगातार करे। शिष्टाचार केवल किताबों में पढ़कर सपनों में नहीं सीखा जा सकता उसे तो मनुष्य अपने जीवन में हर बार लगातार करते हुए यथार्थ की कठोर शिलाओं पर घिस कर मूर्त रूप देता है। शिष्टाचार मन ुष्य जीवन का एक अत्यंत आवश्यक अंग है इसलिए जीवन में प्रगति के लिए इस धारण अत्यंत आवश्यक है। धर्मसूत्र में शिष्ट के लक्षण लिखते हुए कहा गया है

शिष्टाः खलु विगमत्सराः, निरंहकाराः कुम्भीधान्या
अलोलुपाः दम्भ दर्प लोभ मोह क्रोध विवर्जिताः।

अर्थात् धर्मसूत्र के अनुसार शिष्ट उन्हें कहते है जिनमें ईर्ष्या, अभिमान, धनसंग्रह की इच्छा लालच, दम्भ, दर्प, लोभ, मोह, क्रोध नहीं होता। मनुष्य के शिष्टाचार से उसके गुणों, शिक्षा, रूचि और सभ्यता का पता चलता है। महान दार्शनिक देव दयानन्द स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश में शिष्टाचा और शिष्ट को परिभाषित करते हुए लिखते हैं ''शिष्टाचार जो धर्माचरण पूर्वक ब्रह्मचर्य से विद्या ग्रहण कर प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों से सत्य असत्य निर्णय करके सत्य का ग्रहण, असत्य का परित्याग करना है, यही शिष्टाचार है और जो इसको अपने जीवन में करता है वह शिष्ट कहलाता है।'' शिष्टाचार मानव द्वारा जीवन में अपनाने योग्य आचरण है। एक सामान्य व्यवहार भी यदि हम जीवन में पालन करें तो शिष्ट बन सकते है। जिस प्रकार का व्यवहार हम अपने लिए दूसरों से अपेक्षित करते हैं वैसा शिष्ट व्यवहार और आचरण हम स्वयं दूसरों के साथ किया करें।

जिस प्रकार यज्ञ की अग्नि और धुआं ऊँचाई की ओर जाता है और सभी को लाभान्वित करता है उसी प्रकार मनुष्य अपने जीवन में शिष्टाचार और त्याग की अग्नि प्रज्जवलित करके सद्कर्मो की आहुति देते हुए अपनी कीर्ति को बढ़ा सकता है। शिष्टाचार बुरे लक्षणों को नष्ट करता है और इससे कीर्ति और आयु बढ़ती है। केवल शास्त्रों की पुस्तकें पढ़ने से कुछ नहीं सीखा जा सकता जब तक कि उस पढ़े या सुने हुए वेदादि शास्त्रों के ज्ञान को शिष्टाचार के रूप में जीवन में आचरण में ना अपना लिया जाये। इसीलिए वेद भगवान का आदेश भी है।

सं श्रुतेन गमेमहि। मा श्रुतेन विराधिषी।।

शिष्टाचार के लिए कोई पहले से तैयार राजपथ नहीं है। माता-पिता और आचार्य शिष्टाचार सिखाने के कारखाने है इससे विद्या पाकर परिस्थिति के अनुसार शिष्ट आचरण करने वाला बालक ही ज्ञानी बनता है। आर्य संस्कृति तो शिष्टाचारियों के उदाहरणों से भरी पड़ी है। मर्यादा पुरुषोतम श्रीराम, योगेश्वर कृष्ण वर्तमान काल में महर्षि देव दयानन्द सरीखे अनुकरणीय जीवन हमारे सामने है। हम यदि इनके जीवन वृतांत से सीख लेकर अपने जीवन में शिष्टाचार के उन गुणों को धारण करके जीवन यापन करते हैं तो निश्चित से अपने शिष्टाचार के कारण जीवन में सदैव सफल होंगे।

– 602, जी.एच.33, सैक्टर-20, पंचकूला, मो. 09467608686

"You Start Dying Dying "

पाब्लो नेरूदा (स्पेन) की कविता का हिन्दी अनुवाद

आप धीरे-धीरे मरने लगते हैं, अगर आपः
करते नहीं कोई यात्रा,
पढ़ते नहीं कोई किताब,
सुनते नहीं जीवन की ध्वनियाँ,
करते नहीं किसी की तारीफ।

आप धीरे-धीरे मरने लगते हैं, जब आपः
मार डालते हैं अपना स्वाभिमान,
नहीं करने देते मदद अपनी और न ही करते हैं
मदद दूसरों की।

आप धीरे-धीरे मरने लगते हैं,
अगर आपः बन जाते हैं गुलाम अपनी आदतों के,
चलते हैं रोज उन्हीं रोज वाले रास्तों पे,
नहीं बदलते हैं अपना दैनिक नियम व्यवहार,
नहीं पहनते हैं अलग-अलग रंग, या
आप नहीं बात करते उनसे जो हैं अजनबी अनजान।

आप धीरे-धीरे मरने लगते हैं, अगर आपः
नहीं महसूस करना चाहते आवेगों को,
और उनसे जुड़ी अशांत भावनाओं को,
वे जिनसे नम होती हों आपकी आंखें,
और करती हों तेज आपकी धड़कनों को।

आप धीरे-धीरे मरने लगते हैं, अगर आपः
नहीं बदल सकते हों अपनी जिन्दगी को,
जब हों आप असंतुष्ट अपने काम और परिणाम से,
अगर आप अनिश्चित के लिए नहीं छोड़ सकते हों
निश्चित को,
अगर आप नहीं करते हों पीछा किसी स्वप्न का,
अगर आप नहीं देते हों इजाजत खुद को,
अपने जीवन में कम से कम एक बार,
किसी समझदार सलाह से दूर भाग जाने की...।
तब आप धीरे-धीरे मरने लगते हैं...!!!

વેદ

રામેન્દુ

૧. ઋગ્વેદ, યજુર્વેદ, સામવેદ અને અથર્વવેદ આ ચાર વેદ છે. ઋગ્વેદ જ્ઞાન-કાંડ, યજુર્વેદનો વિષય કર્મકાંડ, સામવેદનો ઉપાસના કાંડ અને અથર્વવેદનો વિજ્ઞાન-કાંડ છે. એટલે ઋગ્વેદ મસ્તિષ્કનો વેદ છે, યજુર્વેદ હાથનો વેદ છે, સામવેદ હૃદયનો વેદ છે તો અથર્વવેદ ઉદરનો વેદ છે.

૨. મહર્ષિ દયાનન્દના અનુસાર ચારે વેદમાં ૨૦૪૧૬ મંત્ર છે. ઋગ્વેદમાં ૧૦ મંડળ, ૧૦૨૮ સૂક્ત અને ૧૦,૫૮૯ મંત્ર છે. એના ઋષિનું નામ અગ્નિ છે. એના પહલો મંત્ર છે – *ઓમ્ અગ્નિમીળે પુરોહિતં યજ્ઞસ્ય દેવમૃત્વિજમ્। હોતારં રત્નધાતમમ્।।* - હું એ પ્રભની કે જે સંસારમાં અનાદિ, યજ્ઞપ્રકાશક, બધી ઋતુઓનો કર્તા, મહાદાની, રત્નનિર્માતા અને બધાના અગ્રણી પ્રભુની સ્તુતિ, પ્રાર્થના અને ઉપાસના કરું છું. એજ મારા એકમાત્ર ઉપાસ્ય દેવ છે.

૩. યજુર્વેદના ઋષિનું નામ વાયુ છે, એમાં ૪૦ અધ્યાય અને ૧૯૭૫ મંત્ર છે.

૪. સામવેદના ઋષિનું નામ આદિત્ય છે. એમાં ૧૮૭૫ મંત્ર છે.

૫. અથર્વવેદના ઋષિનું નામ અંગિરા છે. એમાં ૨૦ કાંડ, ૭૩૧ સૂક્ત અને ૫૯૭૭ મંત્ર છે.

૬. મહર્ષિ દયાનન્દજીને યજુર્વેદના ૩૦માં અધ્યાયનો ત્રીજો મંત્ર - ઓમ્ વિશ્વાનિ દેવ સવિતર્દુરિતાનિ પરાસુવા યદ્ ભદ્રં તન્ન આસુવ।। અત્યન્ત પ્રિય હતો. એનો અર્થ છે –
હે પ્રભુ! કૃપા કરીને અમારા સમ્પૂર્ણ દુર્ગુણ, દુર્વ્યસન અને દુઃખોને દૂર કરી દો અને જે કલ્યાણકારી ગુણ, કર્મ, સ્વભાવ અને પદાર્થ છે એ અમને પ્રાપ્ત કરાવો. એજ કારણ છે કે મહર્ષિ દયાનન્દજીએ યજુર્વેદના ભાષ્યના પ્રત્યેક અધ્યાયનો આરંભ આજ મંત્રથી કર્યો છે.

૭. છ (૬) વેદાંગ છે, જેનં સંક્ષિપ્ત વિવરણ નીચે પ્રમાણે છે :-

(૧) શિક્ષા – આનાથી વેદમંત્રોના ઉચ્ચારણનું જ્ઞાન થાય છે. એના ત્રણ અંગ છે – ઉચ્ચારણ, શબ્દોનું સ્વરુપ અને એનો અર્થ. આમાં પાણિનિકૃત પાણિનીય શિક્ષા આદિ ગ્રંથનો સમાવેશ થઈ જાય છે.

(૨) કલ્પ – એમાં યજ્ઞોનું વિધાન આવે છે. કલ્પનો અર્થ છે બનાવવા – સુધારવું – સંસ્કાર દ્વારા નિર્માણ કરવું. એમાં સાધારણ યજ્ઞોથી લઈને અશ્વમેધ આદિ મોટા મોટા યજ્ઞોના પ્રકારનોનું વર્ણન છે.

(૩) વ્યાકરણ – આમાં વૈદિક વ્યાકરણના નિયમ છે. વ્યાકરણ શબ્દનો અર્થ છે – પૃથક્કરણ. આમાં શબ્દોનું વિશ્લેષણ કરવામાં સહાયક શાસ્ત્ર, વ્યાકરણ કહેવાય છે. એમાં પાણિનીકૃત “અષ્ટાધ્યાયી”, પતંજલિકૃત “મહાભાષ્ય”નો સમાવેશ થઈ જાય છે.

(૪) નિરુક્ત - “નિરુક્ત”માં કુલ ૧૪ અધ્યાય છે. વસ્તુતઃ આમાં ૧૨ અધ્યાય અને ૨ પરિશિષ્ટ રુપમાં છે. “નિરુક્ત” વૈદિક શબ્દોની નિરુક્તિ છે. નિરુક્તિનો અર્થ છે – વ્યુત્પત્તિ. “નિરુક્ત”નો સર્વમાન્ય મત છે કે પ્રત્યેક શબ્દ કોઈને કોઈ ધાતુ સાથે સંબંધિત છે. બધાં જ શબ્દો કોઈને કોઈ ધાતુમાંથી બનેલા છે. આ વૈદિક શબ્દોની વ્યાખ્યા કરે છે. યાસ્ક મુનિકૃત નિઘણ્ટુ પર જ સ્વયં યાસ્ક મુનિનું ભાષ્ય “નિરુક્ત” કહેવાય છે. નિઘણ્ટુ વિશ્વનો પ્રાચીનતમ શબ્દકોષ મનાય છે.

(૫) છંદ – જેમાં ભિન્ન ભિન્ન અક્ષરોની એક ચોક્કસ સંખ્યા હોય એને છંદ કહેવાય. છંદોની ગણતરી સાત સ્વરોના અનુપાતમાં સાત છે. બીજા પણ કેટલાક છંદ છે, પરંતુ એ પણ આ સાત છંદમાં જ આવી જાય છે. એમાં પિંગળ ઋષિ કૃત “પિંગળસૂત્ર” આવે છે.

(૬) જ્યોતિષ – આમાં ભૂગોળ અને ખગોળ વિદ્યા આદિનો ઉલ્લેખ છે. ગણિત અને વિજ્ઞાન મુખ્ય વિષય છે. વસ્તુતઃ ગણિત જ્યોતિષ વેદાનુકૂળ છે પરંતુ ફલિત જ્યાતિષ નહીં, કારણ કે એ નિરાધાર અને અનુમાન માત્ર પર નિર્ભર છે. જ્યોતિષના વિષયમાં કહ્યુ છે –

તદ્વેવતા શાસ્ત્રાણાં નાગાનાં મણયો યથા।
તદ્વેવતા શાસ્ત્રાણાં ગણિતં મૂર્ધનિ સ્થિતમ્।।

જેમ મોરના માથા પર શિખા, નાગના માથા પર મણિ હોય છે, એવી જ રીતે વેદાંગ શાસ્ત્રોમાં ગણિત સહુથી ઉપર છે. વેદાંગના વિષયમાં આચાર્ય ભાસ્કર લખે છે

શબ્દ શા મુખં જ્યોતિષં ચક્ષુષી, શ્રોત્ર મુક્ત નિરુક્તં ચ કલ્પઃ કરૌ।
યા તુ શિક્ષાસ્ય વેદસ્યસા નાસિકા, પદપદ્મન્દયં છંદ આધૌબુધૈ।।

વ્યાકરણ વેદના મુખના, જ્યોતિષ આંખોના અને નિરુક્ત કાનના સમાન છે, કલ્પ હાથ સમાન અને શિક્ષા નાસિકા સમાન છે. પગ છંદ સમાન છે. આ પ્રાચીન વિદ્વાનોના વિચાર છે.

૮. ચારે વેદનું વિભાજન મહર્ષિ વેદવ્યાસે નથી કર્યું, જેમ કે અથર્વવેદમાં લખ્યું છે –

ઋચઃ સામાનિચ્છન્દાંસિ પુરાણં યજુષાસહ।
ઉચ્છિષ્ટાજ્જજ્ઞિરે સર્વે દિવિ દેવા દિવિશ્રિતઃ।।
અથર્વ. ૧૧. ૭. ૨૪

પ્રસ્તુત મંત્રમાં ચારે વેદોના નામ એક સાથે આવ્યા છે. એ સિદ્ધ કરે છે કે ચારે વેદનું જ્ઞાન એક સાથે પ્રાપ્ત થયું છે ન કે ક્રમિક વ્યવસ્થામાં, એનાથી એ પણ જ્ઞાત થાય છે કે વેદોનું વિભાજન મહર્ષિ વેદવ્યાસે નહોતું કર્યું અપિતુ પ્રભુ દ્વારા કરવામાં આવ્યું હતું. મહર્ષિ વેદવ્યાસે તો ચારે વેદોની શિક્ષા પોતાના શિષ્યો પૈલ, વૈશમ્પાયન, જૈમિનિ અને સુમન્તુને આપી હતી.

૯. મહર્ષિ દયાનન્દે ૨૦. ૮. ૧૮૭૬ ઈ. સ. ના દિવસે મંગળવારે પં. ભીમસેન, જ્વાલાદત્ત આદિને ઋગ્વેદાદિભાષ્યભૂમિકા લખાવવાનો આરંભ કર્યો હતો. અનુમાન છે કે આ ગ્રંથ લખવામાં લગભગ પોણા ત્રણ મહીના લાગ્યા હતા.

૧૦.ઋગ્વેદાદિભાષ્યભૂમિકામાં ૩૬ અધ્યાય અને ૫૨ વિષય છે. વસ્તુતઃ ઋગ્વેદાદિભાષ્યભૂમિકા વેદોની ચાવી છે અને સ્વામી વિદ્યાનંદ સરસ્વતી કૃત ભૂમિકાભાસ્કર મુજબ ઋગ્વેદાદિભાષ્યભૂમિકા વેદોની ચાવી છે જેમાં લેખતે પ્રસ્તુત ગ્રંથની વિશદ્ વ્યાખ્યા કરી છે.
પંડિત ભગવદ્દત્ત પોતાના ગ્રંથ “વૈદિક વાઙ્મય કા ઇતિહાસ” (દ્વિતીય ભાગ)માં લખે છે –
દયાનંદ સરસ્વતીની ઋગ્વેદાદિભાષ્યભૂમિકા એમની અસાધારણ યોગ્યતાનું જીવંત પ્રમાણ છે. વેદનો અભ્યાસ કરનારાઓ દયાનંદ સરસ્વતીના વિચારો સાથે ગમે તેટલા અસહમત હોય, પરંતુ ભૂમિકાનો પાઠ કરીને એકવાર તો મુક્ત કંઠે એની પ્રશંસા કરવા લાગે છે.
જેમ કે મેક્સમૂલર લખે છે –

We may divide the sanskrit literature beginning with the Rigveda and ending with Dayanand's o introduction to his edition o the Rigveda, his by no means uninteresting Rigveda Bhumika into two great periods. – India what can it teach us

સંસ્કૃત વાઙ્મયનો આરંભ ઋગ્વેદથી છે અને અન્ત દયાનન્દ સરસ્વતીની ઋગ્વેદાદિભાષ્યભૂમકા ૫૨. આ ભૂમિકા કોઈપણ રીતે અરુચિકર નથી.

૧૧ ઋગ્વેદાદિભાષ્યભૂમિકામાં "વેદવિષયવિચાર"નામના અધ્યાયમાં ૩૩ દેવતા નીચે પ્રમાણે છે –

- ૮ વસુ – અગ્નિ, જળ, પૃથિવી, વાયુ, અન્તરિક્ષ, દ્યૌં, ચન્દ્રમા અને નક્ષત્ર. કારણ કે બધાં પદાર્થ આમાંથી વસે છે એટલે આમને વસુ કહે છે.
- ૧૧ રુદ્ર – ૧૦ પ્રાણ અર્થાત્ પ્રાણ, અપાન, વ્યાન, સમાન, ઉદાન, નાગ, કૂર્મ, કૃકલ, દેવદત્ત, ધનંજય અને ૧૧માં આત્મા. કારણ કે જ્યારે આ શરીરમાંથી બહાર નિકળી જાય છે ત્યારે સગા-સમ્બન્ધીઓ રડે છે એટલે એમને રુદ્ર કહે છે.
- ૧૨ આદિત્ય – ૧૨ આદિત્ય, ૧૨ મહીનાઓને કહે છે. કારણ કે આ જગતના પદાર્થોનું આદાન - પ્રદાન કરે છે. એટલે એમને આદિત્ય કહ્યા છે.
- એક ઈન્દ્ર – (વિજળી)
- પ્રજાપતિ (યજ્ઞ)

૧૨ વેદાનુસાર સૃષ્ટિકાળ ૪,૩૨,૦૦,૦૦,૦૦૦ વર્ષનો છે અને સૃષ્ટિનું સર્જન થયે ૧,૯૬,૦૮,૫૩,૧૧૭ વર્ષ થઈ ગયા છે. આમ હજુ ૨,૩૫,૯૧,૪૬,૮૮૩ વર્ષ બાકી છે. આવી જ રીતે વિભિન્ન વૈજ્ઞાનિકો અને ઈતિહાસકારોએ પણ વેદોની જેમ પૃથિવીની આયુ લગભગ ૨ અબજ વર્ષની માની છે, જેનું વિવેચન નીચે પ્રમાણે છે – The age of the earth is about two thousand million years – Dr. William Rose (Outline of modern knowledge p. 152)

પૃથ્વીનું આયુષ્ય લગભગ ૨અબજ વર્ષનું છે.

Our globe must be about two thousand million years old and can in no case be much older. – Lecomte Dunany (Human Defriay P- 48

આપણી પૃથ્વી લગભગ ૨ અબજ વર્ષની છે અને કોઈપણ રીતે વધારે જુની નથી.

Astromomers and Mathematicians give us 2000 million years as the age o the earth as body separate rom us. (- H. G. Wels –Outline of History P- 19)

જ્યોતિષી અને ગણિતજ્ઞો સૂર્યથી જુદી પડેલી પૃથ્વીની આયુ લગભગ ૨ અબજ વર્ષની ગણાવે છે.

૧૩ મહર્ષિ દયાનંદે સર્વપ્રથમ વેદોનું ભાષ્ય હિન્દી ભાષામાં કર્યું હતું. પરંતુ દુર્ભાગ્યવશ યજુર્વેદના ૧૯૭૫ અને ઋગ્વેદના ૫૬૪૯ મંત્રો (૭ મંડળ, ૬૨ સૂક્ત, ૨ મંત્ર) સુધી જ વેદોનું ભાષ્ય કરી શકયા હતા. આમ એમણે વેદોના ૨૦,૪૧૬ મંત્રોમાંથી ૭૬૨૪ મંત્રોનું જ ભાષ્ય કર્યું હતું, અને બાકીના ૧૨,૪૧૬ વેદમંત્રોનું ભાષ્ય એમનું બલિદાન થવાને કારણે ન થઈ શક્યું. બાકીના ઋગ્વેદ, સામવેદ, અથર્વવેદના મંત્રોનું ભાષ્ય અન્ય આર્ય વિદ્વાનોએ પુરુ કર્યું છે.

૧૪ ડૉ. સ્વામી સત્ય પ્રકાશજીએ વિદેશી લેખક ગ્રિફીથની જેમ અંગ્રેજીમાં ચારે વેદોનું ૨૩ વિભિન્ન ભાગોમાં ભાષ્ય કર્યું છે.

૧૫ અધ્વર શબ્દ યજ્ઞનો પર્યાયવાચી છે. અ નો અર્થ છે – નહીં, ધ્વર નો અર્થ છે હિંસા. એટલે યજ્ઞોમાં કોઈપણ પ્રકારની હિંસાનો નિષેધ છે. જેમ કે આચાર્ય યાસ્કમુનિ લખે છે –

अध्वर ईत यज्ञ नाम ध्वरिति हिंसा कर्मा तत्प्रतिषेधः

(નિરુક્ત – ૨.૭)

યજ્ઞનું નામ અધ્વર છે, એનો અર્થ હિંસારહિત કર્મ છે. યજુર્વેદમાં ૪૩ સ્થળો ઉપર એનો પ્રયોગ થયો છે. એટલે વેદોમાં યજ્ઞને કામધુક્ પણ કહ્યો છે. જેનો અર્થ છે - ભાવો અને બાધાઓને દૂર કરવા વાળો.

૧. યજ્ઞનો આત્મા સ્વાહા છે. એનો ભાવ છે કે યથાશક્તિ દરેક જાતનો ત્યાગ. એટલે યજ્ઞમાં આ શબ્દનો વારંવાર પ્રયોગ કરવામાં આવે છે.
૨. યજ્ઞના પ્રાણ ઈદં ન મમ છે. એટલે કે આ મારા માટે નથી. યજ્ઞમાં આ શબ્દનો પ્રયોગ વારંવાર કરવામાં આવ્યો છે.
૩. યજ્ઞનો સાર સુગંધિ છે, જેમાં ચતુર્દિક્ સુગંધિ ફેલાય, એજ યજ્ઞ છે. જેનાથી દુર્ગંધ ફેલાય એ યજ્ઞ નથી.
૪. યજ્ઞના વિભિન્ન દેવોનું મુખ આહુતિઓની અગ્નિ છે.
૫. યજ્ઞનો સાર દાન છે.

पसीने से अर्जित रोटी में आनन्द है

गुजरात के सन्त रविशंकर महाराज एक गांव में सवा मन गुड़ बांट रहे थे। एक लड़की को गुड़ देने लगे तो वह बोली–'महाराज, मैं गुड़ नहीं लूंगी।' 'क्यों बेटी, क्यों नहीं लोगी?' 'मां ने मुझे सिखाया है कि मुफ्त में कोई भी वस्तु किसी से नहीं लेनी चाहिए।' 'तब कैसे लेनी चाहिए?' महाराज ने पूछा।' भगवान ने हमें दो हाथ, दो पैर दिये हैं, तब मुफ्त में कोई वस्तु क्यों ली जाये? परिश्रम करके ही कुछ लेना चाहिए, वैसे नहीं।'

महाराज विस्मय–मिश्रित मुस्कान से उस बालिका की ओर देखते रहे। उनकी इच्छा इस लड़की की मां से मिलने की हुई और उसके घर जाकर उन्होंने बच्ची से हुई बातचीत का वृत्त उसकी मां को कह सुनाया। मां ने भी वही बात कही–'महाराज, बच्ची ने ठीक ही तो कहा है। भगवान् ने दो–दो हाथ–पैर दिये हैं कमाने और खाने के लिए। दूसरे वस्तु मुफ्त में लेना अच्छा नहीं है।' 'तुमने धर्मशास्त्र पढ़े हैं बहिन?'' नहीं महाराज।' 'गुजर–बसर कैसे होती हैं?' 'मैं लकड़ी काट लाती हूँ। उनको बेच कर निर्वाह हो जाता है।' 'तुम्हारे पतिदेव, बहिन?' इस प्रश्न से वह उदास हो गयी। लम्बा उच्छ्वास लेकर उसने कहा–'इसके पिता को तो भगवान् ने थोड़ी ही आयु में अपने पास बुला लिया था महाराज। वे 30 बीघा जमीन और एक जोड़ी बैल छोड़ गये थे, पर मैंने सोचा कि यह रकम तो मेरी कमाई की नहीं है। इसलिए वह सब बेचकर, गांव में पानी की तंगी को दूर करने के लिए सारा धन कुआं बनवाने पर व्यय कर दिया है। अब मैं और मेरी बच्ची अपने परिश्रम से जी रहे हैं।' रविशंकर महाराज गद्गद् हो गये उस बहिन की बात को सुनकर। श्रम करके पसीने से अर्जित रोटी में जो आनन्द है वह मुफ्त की परायी हलुआ–पूड़ी में कहां?

महर्षि दयानन्द सरस्वती उपदेशक महाविद्यालय (टंकारा)

प्रवेश प्रारम्भ

अपने बच्चों को विद्वान्, चरित्रवान तथा संस्कारी बनाने के लिए ऋषि दयानन्द जी की जन्मभूमि टंकारा के गुरुकुल में प्रवेश करवायें। योग्यता-शरीर तथा मन से स्वस्थ होना चाहिए।

शैक्षणिक योग्यता- कक्षा 7, 8 अथवा 10वीं पास। केवल लड़कों के लिए गुरुकुल है। प्रवेश की संख्या सीमित है। अपना आवेदन 15 जून 2017 से पहले भेजने का कष्ट करें। गुरुकुल महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय रोहतक हरियाणा से सम्बन्धित है। विशेष जानकारी के लिए पत्र लिखें अथवा गुरुकुल के आचार्य जी से फोन पर सम्पर्क करें और आने से पूर्व आचार्य जी से आज्ञा लेवें। (केवल आमन्त्रित ब्रह्मचारी ही आवें।)

अध्यापकों की आवश्यकता

प्राच्य व्याकरण पद्धति से, गुरुकुल झज्जर (हरियाणा) के पाठ्यक्रमानुसार पढ़ाने की क्षमता रखता हो ऐसे अध्यापक की आवश्यकता है। आचार्य, शास्त्री आदि की डिग्री हो या न हो तो भी आवेदन कर सकते हैं। वेतनमान योग्यतानुसारा। आवास-भोजनादि की व्यवस्था गुरुकुल में निःशुल्क होगी। गुरुकुल के आचार्य जी को अपनी योग्यतादि के विवरण समेत आवेदन भेजे।

आचार्य रामदेव जी

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा,

डाकखाना-टंकारा, जिला-मोरबी (गुजरात), पिन-363650, मो. 09913251448

प्रवेश प्रारम्भ

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया राजस्थान राज्य के अलवर जिले में राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित है। यह गुरुकुल दिल्ली से 100 किलोमीटर एवं जयपुर से 150 किलोमीटर की दूरी पर है। यह गुरुकुल वर्तमान में कन्याओं की शिक्षा का सर्वोत्तम केन्द्र है। अतः समस्त आर्यजनों से निवेदन है कि गुरुकुल में बालिकाओं को प्रवेश दिलाकर आर्ष सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में योगदान दें।

सम्पर्क करें :

आचार्य प्रेमलता, आर्ष कन्या गुरुकुल, दाधिया, अलवर, राजस्थान-301401,

फोन: 01495-270503, मो. 09416747308

स्थापित सन् 1909

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, (सासनी) हाथरस

पत्रालय-कन्या गुरुकुल, पिन-204104, जिला-हाथरस, उत्तर प्रदेश

प्रवेश प्रारम्भ सत्र 2017-18

❁ कक्षा शिशु से कक्षा नवम तक। ❁ विद्याविनोद प्रथमवर्ष (11) तथा उत्तरमध्यमा प्रथमवर्ष (11)। ❁ विद्यालंकार/वेदालंकार (समकक्ष बी.ए. ऑनर्स) तथा शास्त्री (समकक्ष बी.ए.) प्रथम वर्ष। ❁ आचार्य प्रथम वर्ष। ❁ विद्याविनोद (समकक्ष इण्टरमीडिएट) तक विज्ञान वर्ग की शिक्षण व्यवस्था। ❁ प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद की गायन, वादन में संगीत प्रभाकर तक शिक्षण व्यवस्था। ❁ **कन्या गुरुकुल निजी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र (आई.टी.आई.) में कोपा (Computer Programming Assistant) एवं स्विंग टेक्नोलॉजी (Swing Technology) का एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम है कन्या गुरुकुल निजी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र एन.सी.वी.टी. द्वारा मान्यता प्राप्त है।** मो. 09258040119, 08006340583, 09927991922, 09458480781

E-mail:kanyagurukulmhv.hathras@gmail.com, www.kanyagurukul.in

डॉ. श्रीमती पवित्रा विद्यालंकार, मुख्याधिष्ठात्री एवं आचार्य

पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी पर डाक टिकट जारी

यह प्रयास बधाई व सराहना के योग्य है।

तत्पश्चात डॉ. पूनम सूरी जी द्वारा महात्मा आनन्द स्वामी परफॉरमिंग आर्टस ब्लाक का उद्घाटन किया गया। महात्मा आनन्द स्वामी परफॉरमिंग आर्टस ब्लाक के उद्घाटन के समय संगीत विभाग की छात्राओं द्वारा फोक आर्केस्ट्रा प्रस्तुत किया गया। माननीय डॉ. पूनम सूरी के करकमलों द्वारा कॉलेज कंटीन बिटस एंड बाईटस का उद्घाअन भी किया गया। इस अवसर पर कॉलेज की हिन्दी विभाग की असिस्टेंट

पोस्टल डिजीवन जालंधर की ओर से 34वीं जिला स्तरीय डाक टिकट प्रदर्शनी ''जलपैक्स-2016'' विरसा विहार में लगाई गई प्रदर्शनी के दौरान डी.ए.वी. मैनेजिंग कमेटी नई दिल्ली व हंसराज महिला महाविद्यालय के इतिहास में एक और स्वर्णिम क्षण जुड़ गया जब डाक विभाग, संचार मन्त्रालय भारत सरकार द्वारा डी.ए.वी. मैनेजिंग कमेटी व आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान आर्य रत्न डॉ. पूनम सरी की तस्वीर समेत डाक टिकट व एचएमवी की तस्वीर समेत विशेष आचरण जारी किया गया। इस अवसर पर पोस्टल सर्विस की डायरेक्टर मीनाक्षी यादव व पोस्ट आफिसिज के वरिष्ठ अधिकारी मोहम्मद हनीफ भी उपस्थित थे। उन्होंने डाक टिकट व विशेष आवरण जारी होने पर प्राचार्या डॉ. अजय सरीन को बधाई दी तथा डॉ. पूनम सूरी की डाक टिकटों व विशेष आवरणों का पहला सेट भी सौंपा। प्राचार्या डॉ. सरीन ने कहा कि डी.ए.वी. मैनेजिंग कमेटी के प्रधान आर्य रत्न डॉ. पूनम सूरी के नाम पर डाक टिकट जारी करना वास्तव में डी.ए.वी. मैनेजिंग कमेटी एवं एच.एम.बी के लिए अति सम्मान का विषय है। वर्ष 2016 में संस्थानों के लिए टिकटों की कस्टमाइज्ड प्रिटिंग फिर से शुरु करने के बाद एचएमबी ऐसा गौरव प्राप्त करने वाला उत्तर भारत का प्रथम संस्थान बन गया है। इस अवसर पर डीन अकादमिक डॉ. मीनाक्षी स्याल, डीन यूथ वैल्फेयर प्रो. नवरूप व आफिस सुपरिटेंडेट अमरजीत खन्ना भी उपस्थित थे।

सायंकालीन कार्यक्रम में मुख्यातिथि डॉ. पूनम सूरी ने कॉलेज के रागिनी सभागार में दीप प्रज्जवल कर 'जश्न-ए-आमद' का शुभारम्भ हुआ। डी.ए.वी. गान के पश्चात फूल भेंट कर प्राचार्या प्रो. डॉ. अजय सरीन ने माननीय डॉ. पूनम सूरी का स्वागत किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि माननीय आर्य रत्न डॉ. पूनम सूरी जी के आने पर आयोजित कार्यक्रम 'जश्न-ए-आमद' प्रसन्नता का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि पूनम सूरी जी उर्जा का कभी न खत्म होने वाला स्त्रोत है जो सदैव कुछ न कुछ नया करने के लिए सदा प्रोत्साहित करते रहते हैं। इस अवसर पर डाक विभाग, संचार मन्त्रालय भारत सरकार द्वारा माननीय डॉ. पूनम सूरी की तस्वीर समेत डाक टिकट भी रिलीज की गई। आदरणीय डॉ. पूनम सूरी जी ने एच.एम.वी. ने नाम एक पत्र में लिखा कि एच.एम.वी. में आने के लिए वह सदा ही लालायित रहते है। पर इस बार उन्हें यह देख कर विशेष प्रसन्नता हो रही है कि यहां की प्राचार्या स स्टाफ सदा ही कुछ नया सोचने व नया करने का प्रयास करता रहता है। एच.एम.वी. सदा नई उड़ाने भरने के लिए प्रयासरत्त रहता है। इसी श्रृंगला के अन्तर्गत एच.एम.वी. का

हंसराज महिला महाविद्यालय जालंधर की प्राचार्या प्रो. डॉ. अजय सरीन फर्स्ट डे कवर की प्रथम प्रति पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी जी को भेंट की।

प्रोफेसर डॉ. निधि बल द्वारा लिखित व निर्देशित नुक्कड़ नाटक 'हमसे मिले' भी प्रस्तुत किया गया। उन्होंने कॉलेज की नवनिर्मित स्वामी दयानन्द लाइब्रेरी का दौरा भी किया था लाइब्रेरी की बहुत प्रशंसा की। डॉ. सूरी द्वारा कॉलेज परिसर में इलाहाबाद बैंक के एटीएम का उद्घाटन भी किया गया। रिलायंस जियो इन्फोकॉम लिमिडेट के सौजन्य से कॉलेज परिसर में 'वाई-फाई 4 जी' का शुभारम्भ भी किया गया। डी.ए.वी. लोकल कमेटी के चेयरमैन जस्टिस एन.के सूद ने सभी का धन्यवाद किया। कार्यक्रम के अंत में छात्राओं ने गिद्दा प्रस्तुत किया। इस अवसर पर श्री आर.एस.शर्मा (जनरल सचिव), डॉ. सतीश कुमार शर्मा (डायरैक्टर कॉलजिस), श्री जे.पी.शूर., श्रीमती जे. ककड़िया (डायरैक्टर, पी.एस.), बिज ए.के. अदलखबा (डायरैक्टर प्रशासन) और श्रीमती अदलखबा, श्री अरविंद घई, श्री बी.के. मित्तल, श्री एस. आर. अरोड़ा (सचिव), डॉ. ए.के.पोल (वाईस चांसलर), डॉ. आर.के. भारद्वाज (रजिस्टरार, डी.ए.वी. यूनिवर्सिटी), श्रीमती पी.पी. शर्मा, डॉ. नीलम कमरा (रिजनरल डायरैक्टर डी.ए.वी. पीएस),एचएमबी के टीचिंग और नॉन टीचिंग विभाग के सदस्य भी मौजूद थे। मंच का संचालन डॉ. जसबीर ऋषि ने किया।

18वां वैवाहिक परिचय सम्मेलन 9 जुलाई 2017

हम सब मिलकर आर्यसमाज के कार्यो को आगे बढ़ाने के लिए कृतसंकल्प हैं। इसी निमित्त हम अनेक कार्यो का सम्पादन अपने-अपने आर्य समाजों के माध्यम से निरन्तर कर रहे हैं। आर्यसमाज की विचारधारा व्यक्ति की नहीं परिवार की विचारधारा है। जब तक आर्यसमाज परिवार के साथ नहीं जुड़ेगा तब तक हम सशक्त नहीं हो सकते। इसीक्रम में आवश्यक प्रतीत हुआ कि हमें अधिक से अधिक आर्य परिवारों के निर्माण की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। आर्य परिवारों के सामने एक ऐसे मंच का अभाव सा है जहां वे अपने गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार अच्छे वर-वधू का चयन कर सकें। जाति के आधार पर बने अनेक संगठन तो इस कार्य को कर रहे हैं किन्तु वैदिक विचारधारा वाले महानुभाव जिनमें कोई भी जाति का आधार न हो, उनके लिए ऐसी कोई व्यवस्था नहीं थी। इस हेतु सभा ने गत 7 वर्ष पूर्व आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलनों के कार्य को आरम्भ किया था। तब से इसकी उपयोगिता के चलते ये निरन्तर चलता चला आ रहा है। इस वर्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में 18वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन रविवार दिनांक 9 जुलाई 2017 को प्रातः 10 बजे से आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 में आयोजित किया जाएगा।

आर्यजन अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से सम्बन्ध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्रतिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधिध सभा' के नाम 300/- रूपये का डिमाण्ड ड्राफ्ट संलग्न करके भेजें अथवा 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम एक्सिज बैंक खाता संख्या 910010001816166 करोल बाग शाखा में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेंजे।

आर्यजनों/पाठकों एवं आर्यसमाज के सभी पदाधिकारियों/सदस्यों से निवेदन है कि अपनी आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संगों में बार-बार इसकी सूचना देवें तथा प्रकाशित फार्म की प्रतियां करके आर्य समाज में रखवा लेवें, मांगने पर अपने सदस्य को दें और नोटिस बोर्ड पर लगाकर, सदस्यों को यह भी निवेदन करें कि वे अपने सम्पर्क के परिवारों को इसमें भाग लेने के लिए प्रेरित करें।

सम्पर्क करें-

अर्जुनदेव चढ्डा, राष्ट्रीय संयोजक
मो. 9414187428

एस.पी.सिंह, संयोजक, दिल्ली
मो. 9540040324

सौप्रस्थानिक समारोह सम्पन्न

<u>**गुरुकुल प्रभात आश्रम**</u> के ब्रह्मचारियों का सौप्रस्थानिक समारोह 10 जून 2017 को सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता कुलपति स्वामी विवेकानन्द सरस्वती ने की। उन्होंने अपने आशीर्वचनों में कहा ''ज्ञान की कोई सीमा नहीं है, ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती भी स्वयं ज्ञानसमुद्र में न डूब जाये इस भय से वीणा को धारण करती है तो सामान्य मनुष्य की तो क्या बात है। उन्होंने कहा गुरुकुल में रहते हुए ब्रह्मचारियों ने दस वर्षो में ज्ञानार्जन की योग्यता को ही अर्जित किया है। विद्या का अपार क्षेत्र अभी भी उनके लिए अज्ञात ही है। समारोह में मुख्य अतिथि आर्य समाज थापर नगर मेरठ के प्रधान श्री राजेश सेठी उपस्थित रहे। आचार्य श्री ज्ञानेश्वर जी ने प्रतिदिन ध्यान का अभ्यास कराया एवम् शाम को प्रेरक प्रवचन के द्वारा पारिवारिक, सामाजिक व राष्ट्रीय कर्त्तव्यों के विषय में प्रेरणाएं प्रदान की। शिविर के समापन समारोह में पूज्य स्वामी सत्यपति जी ने सभी को आशीर्वाद व प्रेरणाएं प्रदान की। सभी शिविरार्थियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किये गये और जिन्होंने अनुशासन आदि का अच्छा पालन किया उनको आश्रम की ओर से पुरस्कार भी प्रदान किये गये। **-आचार्य**

महिला योग जागृति शिविर सम्पन्न

<u>**वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ गुजरात**</u> में 7 से 11 जून 2017 तक ''महिला योग जागृति शिविर'' का आयोजन किया गया, जिसमें 150 से अधिक कन्याओं और महिलाओं ने भाग लिया। इस शिविर में प्रतिदिनि कक्षाओं में आचार्य शीतल जी ने ''सन्ध्या के शुद्ध मन्त्रों का उच्चारण'' और ''जीवन में आध्यात्मिकता की आवश्यकता'' इन विषयों पर मार्गदर्शन दिया। श्रीमती जयाबेन जी ने 'पारिवारिक सुख शान्ति के उपाय' एवं 'गृहस्थ को स्वर्ग कैसे बनाएं' इन विषयों पर प्रवचन दिया। डॉ. सद्गुणा जी ने 'ज्ञान, कर्म, उपासना' और 'आत्मनिरीक्षण' विषय पर उपदेश दिया। श्रीमती सुनीता जी ने आसन व्यायाम आदि के माध्यम से स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान की। श्रीमती राजमल्होत्रा जी ने यम-नियम के विषय में विस्तार से समझाया।

चुनाव समाचार

आर्य समाज मन्दिर, मल्हारगंज, इन्दौर, मध्य प्रदेश

प्रधान- डॉ. दक्षदेव गौड **मन्त्री-** डॉ. विनोद आहलूवालिया
कोषाध्यक्ष- सुश्री सुशीला शर्मा

आधुनिक भारत-ले चलें शिखर की ओर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत संचालित आर्य विद्या परिषद् दिल्ली के आर्य विद्यालयों का सामूहिक सांस्कृतिकोत्सव

शनिवार 22 जुलाई 2017-प्रातः 10 से 2 बजे तालकटोरा स्टेडियम, नई दिल्ली

समस्त विद्यालय विद्यार्थियों के परिवारों सहित अवश्य पहुंचे।

निवेदकः

धर्मपाल आर्य, प्रधान **विद्यामित्र ठुकराल**, कोषाध्यक्ष **विनय आर्य**, महामन्त्री **सुरेन्द्र रैली**, प्रस्तौता

(पृष्ठ 1 का शेष)

देवे। जब बाहर निकालना चाहे, तब मूलेन्द्रिया को ऊपर खींच के वायु को बाहर ठहर सकता है। जब घबराहट हो तब धीरे-धीरे भीतर वायु को लेके फिर भी वैसे ही करता जाए, जितना सामर्थ्य और इच्छा हो और मन में (ओम्) इसका जप करता जाए। इस प्रकार करने से आत्मा और मन की पवित्रता और स्थिरता होती है...... एक 'बाह्य विषय' अर्थात् जब प्राण भीतर से बाहर निकलने लगे तब उससे विरूद्ध न निकलने देने के लिए बाहर से भीतर ले और जब बाहर से भीतर आने लगे, तब भीतर से बाहर की ओर प्राण को धक्का देकर रोका जाए। ऐसे एक-दूसरे के विरूद्ध क्रिया करें तो दोनों की गति रूककर प्राण अपने वश में होने से मन और इन्द्रियां भी स्वाधीन होते हैं। बल पुरुषार्थ बढ़कर बुद्धि तीव्र सूक्ष्मरूप हो जाती है कि जो बहुत कठिन और सूक्ष्म विषय को भी शीघ्र ग्रहण करती है। इससे मनुष्य शरीर में वीर्यवृद्धि को प्राप्त स्थिर, बल, पराक्रम, जितेन्द्रिया, सब शास्त्रों को थोड़े ही काल में समझकर उपस्थित कर लेगा..... (तीसरा समुल्लास)'

इस प्रकार प्राणायाम आत्मा, मन तथा शरीर की स्वस्थता एवम् सबलता प्राप्त करने के लिए एक अत्यधिक उपयोगी प्रक्रिया है। प्राणायाम के बारे में जहां कुछ लोगों ने अनेक प्रकार की भ्रान्तियां फैला रखी हैं वहीं दूसरी ओर ऐसे भी लोग हैं जो प्राणायाम के नाम पर अपनी दुकानदारी को चमकाने में लगे हुए हैं। जिसके कारण जनसामान्य से यह प्रक्रिया बहुत दूर होती चली जा रही है। हमें एक परिचित से पता चला कि जब उन्होंने किसी महात्मा से प्राणायाम सीखाने का आग्रह किया तो उन्होंने कहा कि अगले जन्म में जब ब्रह्मचारी बनोगे तब ही आपको प्राणायाम सीखाया जा सकता है, यह गृहस्थियों को नहीं सीखाया जाता है। इसी प्रकार कुछ लोग स्त्रियों को प्राणायाम से दूर रखते हैं। वास्तव में प्राणायाम स्त्री-पुरुष सभी को करना चाहिए। हां इतना ध्यान रखना चाहिए कि प्राणायाम से दूर रखते हैं। वास्तव में प्राणायाम स्त्री-पुरुष सभी को करना चाहिए। हां इतना ध्यान रखना चाहिए कि प्राणायाम की विधि सुपात्र एवं योग्य व्यक्ति से ही सीखनी चाहिए। इसके लिए दो विशेष सावधानियों का भी ध्यान रखना चाहिए। पहली यह कि प्राणायाम सदा खाली पेट ही करना चाहिए, दूसरा ऐसे स्थान पर करना चाहिए जहां धूल और धूआं आदि न हो। प्राण-साधना की उपलब्धि वेद में इस प्रकार बताई है-**अश्विना भेषजं मधु भेषजं न सरस्वतीः। इन्द्रे त्वष्टा यशः श्रियँरूपँरूपमधु सुते॥** (यजु. 020-64)। **(अश्विना)** ये प्राण-अपान हमारे शरीर में सोम को व्याप्त करते हैं, **(मधु भेषज्ञं)** यह बहुत कल्याणकारी औषधि है, **(सरस्वतीः)** जब प्राण-अपान शारीरिक रोगों के लिए औषधि बनते हैं तो ज्ञान भी हमारे लिए उत्तम औषधि बनता है.... फिर (इन्द्रे) वह प्रभु(या इन्द्र (या इन्द्र अर्थात् आत्मा) **(यशः)** यश को स्थापित करते हैं....हम यशस्वी बनते हैं, **(श्रियं)** शोभा को प्राप्त होते हैं और **(रूपसम्पन्न)** रूप-सम्पन्न हो जाते है....

- महर्षि दयानन्द धाम, महादेव, सुन्दरनगर-174401, हिमाचल प्रदेश

मनुष्यों परमात्मा मित्र के समान सब सुख देने वाला, संसार को उत्पन्न करने वाला और पालन करने वाला है। सत्य का उपदेश देने वाला है। सभी अच्छे बुरे कर्मो को देखने वाला, सर्व व्यापक अंतर्यामी और न्यायाधीश है इसलिए उस परमात्मा की उपासना करो उसकी उपासना से ही सुख प्राप्त होगा। **-स्वामी दयानन्द**

(पृष्ठ 6 का शेष)

माना है। वे कहते हैं कि इस मन्त्र से गाय की चर्बी का होम करें। वह मन्त्र का अर्थ करते हुए कहते हैं- 'हे जातवेदः अग्ने! तू पितरों के लिए गाय की चर्बी को वहन कर ले जा, जहाँ कि दूर पर निहित उन्हें तू जानता है। चर्बी की नहरें पितरों के पास पहुंचे। दाताओं के मनोरथ भी पूर्ण हों। स्वाहा, सुहुत हो।' इस मन्त्र का अर्थ करते हुए महर्षि ने6वपा' का अर्थ चर्बी न मानते हुए भूमि किया है। उनके अनुसार यह शब्द 'वप' धातु से बना है। जिसमें बीज बोया जाए, वह वपा कहलाती है। इसी प्रकार 'मेदसः कुल्याः' का अर्थ भी चर्बी की नहरें नहीं है अपितु 'स्निग्ध नहरें' हैं। महर्षि अर्थ करते हैं- 'ज्ञानी जनों को चाहिए कि वे जनक व विद्या-शिक्षा देने वाले श्रेष्ठ पितृजनों से खेती-योग्य भूमि को प्राप्त करें। उसकी सिंचाई आदि के लिए उन्हें जलप्रवाह से युक्त नदी व नहरें निकट प्राप्त हों, जिससे सत्य द्वारा उनकी यथार्थ इच्छाएं फलीभूत हों।

(6) यज्ञ का व्यापक अर्थ- यज्ञ शब्द 'यज्' धतु से निष्पन्न होता है और उसके देवपूजा संगतीकरण और दान ये तीन अर्थ होते हैं, जो इस शब्द में अन्तर्निहित हैं। तीनों शब्द बहुत अधिक व्यापक अर्थो और भावों की अभिव्यक्ति करते हैं। महर्षि ने अपने समस्त ग्रन्थों और वेदभाष्य में इन शब्दों में अन्तर्निहित व्यापक अर्थो और भावों को यज्ञ के परिप्रेक्ष्य में वर्णित किया है। महर्षि ने केवल होम करने को ही यज्ञ नहीं माना है अपितु कहा कि मनुष्यों को चाहिए कि संसार के उपकार के लिए जैसे विद्वान् लोग अग्निहोत्र यज्ञ का आचरण करते हैं, वैसे अनुष्ठान करें। (यजु. 17.55) महर्षि ने यज्ञ का पठन-पाठनरूप भी हमारे समक्ष रखा है। वे कहते हैं कि जो विद्या की वृद्धि के लिए पठन-पाठनरूप यज्ञकर्म करने वाला मनुष्य है, वह अपने यज्ञ के अनुष्ठान से सब की पुष्टि तथा सन्तोष करने वाला होता है, इसलिए ऐसा प्रयत्न सब मनुष्यों को करना उचित है। (यजु. 7.27)

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पौराणिक कर्मकाण्डियों द्वारा स्थापित भ्रामक विचारधाराओं का न केवल खण्डन किया अपितु वेद के पदों का निरूक्तानुसार यौगिक अर्थ करते हुए सटीक अर्थ प्रस्तुत करते हुए, धरती से बाहर किसी स्वर्ग नाम के लोक की प्रचलित कल्पना का विरोध किया। मनुष्याकृति वाले देवताओं का यज्ञों में आकर हवि का भक्षण करने सम्बन्धी विचार उन्हें मान्य न था। अधिष्ठात्री देवताओं की सत्ता को उन्होंने स्वीकार नहीं किया। यज्ञों में जादू-टोने का भी उन्होंने घोर विरोध किया। उनसे पूर्व कर्मकाण्डियों द्वारा यज्ञ की एक सीमित परिभाषा होम के रूप में की जाती थी। महर्षि ने यज्ञ का वास्तविक प्रयोजन बताते हुए, एक व्यापक परिभाषा प्रस्तुत की है। उपरोक्त समस्त तथ्यों से यह प्रमाणित होता है कि याज्ञिक विचारधारा को महर्षि ने एक अप्रतिम योगदान दिया है।

- 166, ओल्ड नेहरू कॉलोनी, देहरादून-248001, मो. 9336225967

टंकारा ट्रस्ट इंटरनेट पर
श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा
www.tankara.com
पर उपलब्ध है

पथ प्रदर्शक महात्मा सत्यानन्द मुंजाल का शताब्दी समारोह सम्पन्न

तुम मुझे ना भूल पाओगें, पलट कर देखोगे तुम मुझे हर राह पर पाओगें।

मंच पर उपस्थित सर्वश्री योगेश मुंजाल, सुरेश मुंजाल, सुधीर मुंजाल, उमेश मुंजाल, महेश मंजाल एवम् विजय मुंजाल

24 मई 2017 को महात्मा सत्यानन्द जी की 100वीं जन्म शताब्दी बहुत ही भावपूर्ण तरीके से मनाई गयी। सबसे पहले श्री प्रेम कुमार गुप्ता, सेक्रेटरी डी.एम.सी. लुधियाना द्वारा महात्मा जी की याद में एक चैरिटेबल डायग्नास्टिक लैब का उद्घाटन किया गया, जिसमें सभी प्रकार की आधुनिक मशीनें उपलब्ध करवाई गई, अभी तक सभी टेस्ट डी.एम.सी एंड हॉस्टिपल की लैब में करवाये जा रहे थे। इस लैब में लोगों को 50 प्रतिशत की छूट देकर कम दामों पर अलग-अलग तरह के टेस्ट करके होने वाली बीमारियों के प्रति जागरूक किया गया तथा सभी टेस्ट डी.एम.सी एंड हॉस्पिटल द्वारा किये जाएंगे। इसके पश्चात स्वामी दयानन्द हॉल में मुंजाल परिवार

उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते श्री योगेश मुंजाल जी

महात्मा सत्यानंद मुंजाल डायनास्टिक लैब का उद्घाटन करते हुए श्री प्रेम कुमार गुप्ता- सैक्रेटरी डी. एम. सी., लुधियाना। साथ में श्री योगेश मुंजाल, श्री सुरेश मुंजाल एवम् श्री सुदर्शन शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

द्वारा श्रद्धेय सत्यानन्द जी मुंजाल की सौवीं जयंती पर उन्हें नमन करने हेतु एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें हीरो ग्रुप तथा आर्य समाज मॉडल टाऊन द्वारा संचालित शिक्षण संस्थानों ने सत्यानन्द जी मुंजाल के जीवन से विविध पहलुओं को दर्शाते हुए उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किए। सर्वप्रथम मुंजाल परिवार तथा गणमान्य व्यक्तियों द्वारा श्री सत्यानन्द जी मुंजाल को अश्रु पूर्ण नेत्रों से श्रद्धा सुमन अर्पित किए गये। तत्पश्चात् उनके सुपुत्र श्री सुरेश मुंजाल जी ने आए हुए गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया तथा कहा कि बाऊ जी चाहे आज दैहिक रूप से हमारे बीच नहीं हैं, परन्तु उनकी स्मृति, उनके अमूल्य विचारों की धरोहर तथा उनका आलौकिक संग सदैव हमारे साथ रहेगाा, हमारा मार्गदर्शन करता रहेगा और हमारे आने वाली पीढ़ी पर उनका आशीर्वाद बना रहेगा। बी.सी.एम. फोकल प्वाइंट की छात्राओं ने ''मना रहे जिनके जीवन के सौ साल'' भजन के माध्यम से

महात्मा सत्यानन्द मुंजाल जी के जीवन पर आधारित लघु नाटक प्रस्तुत करते विद्यार्थी।

वातावरण को आध्यात्मिकता के रंग से भर दिया। आर्यकन्या गुरुकुल की छात्राओं ने अपने भजन द्वारा समय को बाँध दिया। तत्पश्चात बी.सी.एम.बी.एड. कॉलेज तथा बी.सी.एम. स्कूल-32 सेक्टर, आर.एस. मॉडल स्कूल तथा बी.सी.एम. स्कूल डुग्री द्वारा पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से उनके स्नेहिल पिता, आदर्श गृहस्थ, कर्मठ आर्य समाजी, उनके स्वरूप तथा जन्म, बचपन तथा देश के विभाजन को दिखा कर उनकी जीवन यात्रा पर प्रकाश डाला। इसके पश्चात "कठपुतली शो" द्वारा उनके साधारण व्यक्ति से सफल श्रेष्ठ व्यवसायी जीवन को दर्शाया गया। इसके पश्चात "महात्मा एक-रूप अनेक" एकांकी मंचन द्वारा यह दर्शाया गया कि एक सफल व्यवसायी होते हुए भी अपनी व्यस्त दिनचर्या में से प्रतिदिन हवन करना, विद्यालयों की देख-रेख तथा परिवार की देख-रेख के लिए वे समुचित समय देते थे। महात्मा जी का जीवन किसी सेनानी से कम नहीं था। उन्होंने हमेशा अपनी वाणी से सबका मार्गदर्शन किया। हर दिशा, हर क्षेत्र में विकास कार्य किये और सबकी उन्नति में अपनी उन्नति मान कर आगे बढ़ते गए। उन्होंने स्वामी दयानन्द जी द्वारा बताये गए मार्ग को केवल पढ़ा या समझा ही नहीं बल्कि अपने जीवन में उतार कर भी दिखाया। इस अवसर पर आचार्य ज्ञानेश्वर जी ने श्री सत्यानन्द जी मुंजाल को एक प्रेरणा स्रोत व संकल्पित आर्य समाजी कहा तथा यह भी कहा कि वे चाहे सादा जीवन जीते थे परन्तु वे एक लक्ष्यपूर्ण जीवन लेकर आए थे और वे अपने लक्ष्य में सफल रहे। साथ ही उन्होंने मुंजाल परिवार को साधुवाद दिया। इस अवसर पर मुंजाल परिवार की ओर से विभिन्न विद्यालयों के श्रेष्ठ छात्रों को पुरस्कृत किया गया तथा सभी प्रधानाचार्यो को भी सम्मानित किया गया। समारोह में शहर के प्रमुख एम.पी. श्री रवनीत सिंह बिट्टू जी ने अपने अमूल्य वचनों से महात्मा जी को श्रद्धा सुमन अर्पित किये। इस अवसर पर एम.एल.ए. भारत भूषण 'आशु', एम.एल.ए. श्री सुरिन्दर डावर, एम.एल.ए. श्री राकेश पांडेय जी तथा श्री ध्रुव मित्तल, प्रधान, करतारपुर गुरुकुल भी श्रद्धांजलि देने के लिए उपस्थित थे। श्री ओंकार सिंह पाहवा जी (सी.एम.डी., एवन साइकिल) द्वारा उन्हें भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी गई। तत्पश्चात् श्री सुदर्शन शर्मा प्रेजिडेंट, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा श्री राजेन्द्र पाल जी स्याल, प्रेजिडेंट आर्य मॉडल टाऊन, लुधियाना, की ओर से श्रद्धा सुमन अर्पित किये गए। डी.एम.सी. हॉस्पिटल के सभी प्रमुख डाक्टर श्रद्धांजलि देने के लिए उपस्थित थे। अंत में श्री योगेश मुंजाल जी ने सभी आए हुए गणमान्य व्यक्तियों के प्रति आभार प्रकट किया तथा उन्हें जलपान भी कराया गया। जिस सुन्दर ढंग से महात्मा जी को श्रद्धांजलि दी गई, उसकी कोई उपमा नहीं दी जा सकती। वो पुण्य आत्मा जहां भी होगी, यह देख कर प्रसन्न होगी कि जीवन भर उनका जो उद्देश्य रहा, उनके जाने के बाद भी कोई उसे भूला नहीं पाएगा और उनके साथ जुड़े सभी लोग चाहे वह उनका परिवार हो, आर्य जन हों या कोई अन्य, सभी दयानन्द जी के बताए रास्ते पर अपनी नयी पीढ़ी के साथ अग्रसर हो रहे हैं। ईश्वर करे उनका आशीर्वाद हमेशा हब सब पर बना रहे।

प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. सत्यपाल 'पथिक' (अमृतसर)

के सुपुत्र श्री दिनेश आर्य "पथिक"

अब दिल्ली में भी

भजन सेवा हेतु उपलब्ध

आर्य जनता को जानकर प्रसन्नता होगी **श्री दिनेश आर्य पथिक** दिल्ली में पूर्ण स्थायी रूप से आ गए हैं। दिल्ली एवम् निकटवर्ती क्षेत्रों के आर्य समाजों से प्रार्थना है कि भजन संध्या, वार्षिकोत्सव/शान्ति सभा आदि कार्यक्रमों के लिए उनकी सेवाओं का लाभ उठाए।

सम्पर्क- मो. 09855098530, 09872955841

(पृष्ठ 2 का शेष)

डी.ए.वी. सैक्टर-8, चण्डीगढ़ की छात्रा कुमारी भूमि सावंत को 12वीं कक्षा में 99.4 प्रतिशत अंक आने पर प्राइड ऑफ डी.ए.वी. के पुरस्कार के रूप में 51000/- रूपये का चैक भेंट करते हुए। साथ में श्रीमती जे. काकड़िया, प्रधाना उपसभा हिमाचल एवम् निर्देशक डी.ए.वी. स्कूलस् व डी.ए.वी. के उपप्रधान श्री एम.एल. सेखरी तथा डॉ. राजेन्द्र नाथ जी।

बच्चों में नैतिक गुणों का समावेश करें ताकि विद्यार्थी अपने जीवन में सफल हो सकें ।

श्री आर.सी.जीवन जी ने कहा कि हमें ईश्वर से यही प्रार्थना करनी चाहिए कि हमारे जो भी दुर्गुण हैं उसे दूर करें व अच्छाइयों की राह पर आगे बढ़ें ताकि हम अपने जीवन को सफल बना सकें।

तत्पश्चात् कुमारी भूमि सावंत, डी.ए.वी. सैक्टर 8 चडीगढ़ की छात्रा जिसने 99.4 प्रतिशत अंकों के साथ बारहवीं कक्षा में राष्ट्रीय स्तर पर द्वितीय स्थान प्राप्त करके पूरे देश एवम् डी.ए.वी. को गौरवान्वित किया को आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी द्वारा प्राइड ऑफ डी.ए.वी. तथा 51,000 का नकद पुरस्कार से सम्मानित किया ।

डी.ए.वी. स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में अनेक रंगारंग कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इसमें विद्यार्थियों द्वारा वैदिक मंत्रों का हिंदी व अंग्रेजी में अनुवाद किया गया, शास्त्रीय संगीत पर आधारित सिम्फनी व हॉरमनी कार्यक्रम प्रस्तुत किया तथा डी.ए.वी. के 131 वर्ष पूरे होने पर एक समूह गान प्रस्तुत किया गया व एक मनमोहक नाटक प्रस्तुत किया गया। अंत में, श्रीमती पी.सोफ्ट, क्षेत्रीय निदेशक, हिमाचल प्रदेश ज़ोन–1 ने समस्त आए अतिथियों का धन्यवाद किया और यह आश्वासन दिया कि प्रधान जी द्वारा दिए गए निर्देशों को हम पूरी तरह पालन करेंगे और उनके आदर्शों को आगे बढ़ाएंगे तत्पश्चात् कार्यक्रम का समापन शांति पाठ से हुआ।

समारोह उद्घाटन के अवसर पर डी.ए.वी. गान के सम्मान में पद्श्री डॉ. पूनम सूरी जी के साथ मंच पर उपस्थित श्रीमती जे. काकड़िया, श्री सत्यपाल आर्य, श्री राजेन्द्र नाथ, महात्मा चैतन्यमूनि, श्री एम.एल. सेखरी, प्रि. जीवन एवम् प्रादेशिक सभा के महामन्त्री श्री एस.के.शर्मा जी

टंकारा समाचार जुलाई 2017

Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2015-16-17

अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं0 U(C) 231/2015-16-17

Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-07-2017

R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.06.2017

मुद्रक व प्रकाशक–रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली–5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय